आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 22 | उदयपुर रविवार 01 दिसंबर 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

टांक और सिंघवी नगर निगम सिरमौर बने

उदयपुर। उदयपुर में हाल ही में हुए नगर निगम चुनाव में गोविंदसिंह

टांक महापौर तथा पारस सिंघवी उप महापौर निर्वाचित हुए। दोनों भाजपा के हैं। गोविंदसिंह टांक ने कहा कि उनका फोकस रोड़ नेटवर्क, ड्रेनेज सिस्टम और फ्लाई ओवर बनाने पर रहेगा। यहां

पर्यटन विकास की असीम संभावना है उसके लिए जो काम अभी चल रहे हैं उन्हें तेजी से पूरे करवाये जाएंगे। निगम बोर्ड में सबका साथ शहर का विकास की सोच के साथ काम करेंगे। मैं सभी 70 पार्षदों का महापौर हूं। मेरे लिए कोई विपक्ष नहीं है। सिंघवी ने कहा कि वे महापौर के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनके मार्गदर्शन में कार्य करेंगे। शहरी विकास और सड़कों की स्थिति में सुधार के कार्य वे पहली प्राथमिकता से करायेंगे।

एसेन्ट करियर पॉइन्ट के अरिष्ट जैन ने रचा इतिहास

चार करोड़ की छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाला राजस्थान का एकमात्र छात्र

उदयपुर। हाल ही में घोषित 'एस्टार' इण्डियन यूथ स्कॉलरशिप एग्जाम में राजस्थान से एकमात्र विद्यार्थी एसेन्ट करियर पॉइन्ट के प्री नर्चर डिविजन के अरिष्ट पुत्र हेमन्त जैन ने सफलता हासिल की।

एसेन्ट करियर पॉइन्ट के मुख्य प्रबंध निदेशक मनोज बिसारती ने बताया कि अरिष्ट जैन कक्षा 8 से एसेन्ट प्री नर्चर डिविज़न में स्कूल सेलेबस तथा विभिन्न ऑलम्पियाड की तैयारी कर रहा है, साथ ही सेन्ट एथॉनी सीनियर सेकन्डरी स्कूल का विद्यार्थी हैं। अरिष्ट ने इस वर्ष सिंगापुर युनिवर्सिटी की तरफ से आयोजित होने वाले एग्जाम एस्टार के दोनों चरणों में सफलता प्राप्त कर लगभग 4 करोड़ रुपये की स्कॉलरशिप हासिल की। अरिष्ट का अगले वर्ष से कक्षा 9 से लेकर 12वीं तक का अध्ययन सिंगापुर स्कूल में होगा, जिसका सम्पूर्ण खर्च सिंगापुर यूनिवर्सिटी की तरफ से उठाया जायेगा।

बिसारती ने बताया कि इण्डियन यूथ स्कॉलरशिप एग्जाम 'एस्टार' सिंगापुर यूनिवर्सिटी के द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है जिसमें कक्षा 9 में अध्ययनरत विद्यार्थी भाग लेते हैं। इससे पूर्व भी अरिष्ट वर्ल्ड वाइल्ड विस्डम क्विज में इन्टरनेशनल रैंक 1 हासिल कर चुके हैं। एग्जाम प्रथम चरण में लिखित परीक्षा सितंबर तथा द्वितीय चरण में साक्षात्कार अक्टूबर में होता है। इस एग्जाम के माध्यम से सिंगापुर यूनिवर्सिटी में चार वर्ष के सिंगापुर - केम्ब्रिज सर्टिफिकेशन कॉर्स के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इस वर्ष इस परीक्षा में भाग लेने के लिए पूरे भारत से लगभग 20,000 बच्चों ने आवेदन किया था जिसमें से केवल 38 बच्चों का ही परीक्षा के लिए चयन हुआ। दिल्ली में हुई परीक्षा में पूरे भारत से केवल 4 छात्रों का चयन हुआ जिसमें राजस्थान से उदयपुर का एकमात्र अरिष्ट जैन चयनित हुआ। इसके अलावा दिल्ली, मुंबई तथा जलगांव से एक-एक छात्र चयनित हुए। संस्था से गत वर्ष भी ऋषभ दोषी का चयन हुआ था।

एसेन्ट प्री नर्चर डिविजन के प्रमुख ब्रिजेन्द्रसिंह शक्तावत ने बताया कि एसेन्ट करियर पॉइन्ट शिक्षा के क्षेत्र में एक जाना माना नाम है जिसमें विद्यार्थियों को इन्जिनियरिंग, मेडिकल में होने वाली प्रवेश परीक्षा जैसे आईआईटी जेईई, नीट, के साथ कक्षा 7वीं से ही छात्रों को ऑलम्पियाड्स की तैयारी करवायी जाती है। इस वर्ष संस्था से 1707 विद्यार्थियों ने मेडिकल प्रवेश परीक्षा (नीट) तथा 123 विद्यार्थियों ने इन्जीनियरिंग प्रवेश परीक्षा (आईआईटी जेईई मेन, एडवान्स) उत्तीर्ण किये।

इसके अलावा एसेन्ट करियर पॉइन्ट के विद्यार्थियों ने न केवल देश अपितु विश्व में भी झीलों की नगरी का लोहा मनवाया है। संस्था से वर्ष 2017-18 में वैभव खतेर ने थाइलैण्ड में होने वाले 12वें इन्टरनेशनल अर्थ सांइस ऑलम्पियाड में देश का प्रतिनिधित्व कर सिल्वर मेडल हासिल किया।

दोनों घर सुरंगा बनाती है लाड़ो बेटी

-डॉ. महेन्द्र भानावत -

वह लाड़ो बेटी अर्थात् लाड़ली बिटिया ही है जो एक घर को ही नहीं, दोनों घरों को सुरंगा, सुहावना, सौभाग्यशाली, सुखदाई तथा सम्माननीय बनाती है। ये दोनों घर हैं जहां वह जन्म लेती है वह उसका पीहर और जहां वह विवाहित होकर जाती है वह उसका ससुराल। कल्पना कीजिये, यदि बेटी न हो। लोक में कहावत है, वह परिवार भाग्यशाली है जिसका आंगन कुंवारा नहीं रहता है। 'आंगणो तो परण्योई आछो लागै' का यही भाव है कि हर परिवार में बेटी हो ताकि उसका आंगन उसका विवाह रचा कर मंगलाचार कर सके। पुण्यशाली बन सके।

वह बेटी ही है जो किसी भी परिवार की धुरी है। बेटी है तो परिवार है। समाज है। सृष्टि है। सगे समधी हैं। त्यौहार-उत्सव हैं। मेलेठेले हैं। लोकाचार हैं। जीमण चूंटण है। आनन्द मौज है। वंश वधावा है। खानपान है। ओढ़ण-पहनण है। मंगल मांगल्य है। सिद्धि-समृद्धि है। हलचल है। सोना सुहागा है।

समधों की कतार है। बाबुल बादल है। भाई बहिन हैं। भावज का भरोसा है। काका काकी हैं। दादा दादी हैं। नाना नानी हैं। मामा मामी हैं। सास सुसरा हैं। नणद नणदोई हैं। देवर जेठ हैं। देराणी जेठाणी हैं। सायब सायिबा हैं। भरापूरा परिवार है। खेती बाड़ी है। पेड़ पौधे हैं। दुधारू चौपाये हैं। चीड़े-चीड़ी हैं। शगुन पंखेरू हैं। मेड़ी ओवरा हैं। घोड़े घोड़ी हैं। बालक बाछरू हैं। आठी कांगसी हैं। सोला सिणगार हैं। ढोल नगाड़े हैं। मेल मालिया हैं। नौकर चाकर हैं। सब तरफ मौज ही मौज है।

यों आदर्श परिवार वही कहा गया है जिसमें बारह परिवार सम्मिलित हैं और जिनके आपस में संप सौहार्द है। ये बारह हैं- इनमें (1) भाई का परिवार (2) भतीजे का परिवार (3) पुत्र का परिवार (4) पौत्र का परिवार (5) बहिन का परिवार (6) भाणेज का परिवार (7) पुत्री का परिवार (8) दोहित्र का परिवार (9) सास का परिवार (10) श्वसुर का परिवार (11) साले का परिवार (12) साली का परिवार। ये सब मिलते हैं तो 'सै' परिवार बनता है। भरापूरा पूरा सुरंगा परिवार बनता है।

यही नहीं, शहर निर्माण में भी इस प्रसंग का वास्तु-शकुन मिलता है। उदयपुर की बसावट को ध्यान में रखते हुए यहां के महाराणा अमरसिंह द्वितीय ने 1672-1710 में चारों ओर 9 किमी लंबा 5 मीटर ऊंचा और 2 मीटर चौड़ा परकोटा शुरू किया जिसे उनके उत्तराधिकारी महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय ने 1733 में पूरा करवाया। शहर में प्रवेश के लिए 12 दरवाजों का निर्माण किया जो पोल के नाम से जाने गये। उनमें हनुमानपोल, रामपोल, किशनपोल, उदियापोल, सूरजपोल, दिल्लीगेट, हाथीपोल, सीतापोल, दंडपोल, चांदपोल, अंबापोल और ब्रह्मपोल हैं।

पारिवारिक सम्बन्धों को लेकर रिश्तों का अजीब निर्वाह करने वाली एक अनूठी घटना वर्षों पूर्व मैंने अपनी दादी द्वारा कही मां से सुनी थी। उसके अनुसार एक सेठजी गाड़े से लदी कमाई लेकर गांव लौट रहे थे। चोर-डाकू के भय से बीच राह में एक गांव की बड़ी पोल में रात्रि विश्राम करने वे बरगद का पेड़ देख रूकने का मन बना घुस गये। वहां नौकर और बहू थे। उन्होंने सेठजी की बड़ी मेहमाददारी की। सुबह विदा के समय पूछवाया गया कि वे समधीजी कहां के हैं। सेठजी बोले, बरगद देखकर ही यहां विश्राम का मन बनाया।

वह लाड़ो बेटी अर्थात् लाड़ली बिटिया ही है जो एक घर को ही नहीं, दोनों घरों को सुरंगा, सुहावना, सौभाग्यशाली, सुखदाई तथा सम्माननीय बनाती है। ये दोनों घर हैं जहां वह जन्म लेती है वह उसका पीहर और जहां वह विवाहित होकर जाती है वह उसका ससुराल। बेटी है तो परिवार है। समाज है। सृष्टि है। सगे समधी हैं। त्यौहार-उत्सव हैं। मेलेठेले हैं। लोकाचार हैं। जीमण चूंटण है। आनन्द मौज है। वंश वधावा है। खानपान है। ओढ़ण-पहनण है। मंगल मांगल्य है। सिद्धि-समृद्धि है। हलचल है। सोना सुहागा है।

- शेष पृष्ठ सात पर

खोज-खबर

विचित्र विवाह

होली पर गोल गधेड़ों :

भीलों में होली के अवसर पर गोध गधेड़ों नामक एक उत्सव का आयोजन होता है। इसमें ताड़ के वृक्ष पर या किसी चिकने खम्बे पर गुड़ और नारियल की एक पोटली बान्ध दी जाती है। इसके बाद लड़कियां इस वृक्ष को घेरकर खड़ी हो जाती हैं। लड़के वृक्ष के निकट जाकर पोटली को लाने का प्रयत्न करते हैं। इस दौरान लड़कियां इन लड़कों को झाड़ू से मार-मारकर रोकती हैं। जो लड़का साहस करके पोटली ले आता है, वही विजेता माना जाता है। विजेता को लड़कियों के घेरे में से अपनी पसंद की लड़की चुनने और उससे विवाह करने का अधिकार मिल जाता है।

सगाई के बाद वर का आधा समय ससुराल में :

सिक्किम के लेपचाओ में सगाई के बाद वर को हर रोज अपना आधा समय अपने ससुराल वालों को देना पड़ता है। इस दौरान वर कन्या पक्ष के घर में रहकर एक नौकर की तरह सारा काम करता है और विभिन्न प्रकार के मजाक सहता रहता है। सगाई के बाद शुरू हुआ यह सिलसिला विवाह के दिन तक चलता है।

असम की कुकी जनजाति में वर को कुछ समय तक अपनी मंगेतर के यहां रहकर काम करना पड़ता है। यदि वर यह विवाह करने का विचार बदल दे, तो उसे ससुराल वालों को हर्जाना भी देना पड़ता है। नेपाल की जौनसारखासा, दक्षिण अमेरिका की किरपाया और बिनबागों और उत्तरी डकोटा की हिदास्ता जनजातियों में ऐसे रिवाज हैं।

पहले हंगामा, फिर शादी :

आन्ध्रप्रदेश के कोंडारेड्डी आदिवासियों में विवाह का इच्छुक युवक अपनी भावी ससुराल में जाकर कन्या से हंसी-मजाक करता है और फिर उसे उठाकर अपने गांव की ओर भाग जाता है। कन्या पक्ष के लोग वर को भला-बुरा कहते हुए उसके पीछे-पीछे भागते हैं। वर के घर पहुंचकर दोनों पक्षों में जमकर मारपीट और घूंसेबाजी होती है। काफी देर तक हंगामा होने के बाद आखिरकार दोनों पक्षों के बीच शान्ति-सुलह की बातें होने लगती हैं। अन्ततः, वर-वधू का विवाह सम्पन्न करा दिया जाता है।

कड़कती धूप में निराहार :

आस्ट्रेलिया के उत्तरी क्षेत्र में विवाह के इच्छुक व्यक्ति को पूरे पन्द्रह दिनों तक लगातार कड़ी धूप में निराहार बैठना पड़ता है। इसके बाद ही उसे विवाह करने योग्य समझा जाता है।

नौका में से तीर :

ब्रिटिश गुयाना में लड़के को चलती नौका में से एक निर्धारित स्थान पर तीर से निशाना लगाना पड़ता है। इस परीक्षा में पास होने के बाद ही उसे विवाह की स्वीकृति मिलती है। **- योगेश शर्मा**

बिल्ली से शादी :

कुछ पति गुस्से या मजाक में अपनी पत्नी को बिल्ली कह देते हैं, लेकिन एक व्यक्ति ने सचमुच में बिल्ली को अपनी पत्नी बना लिया। जर्मनी का एक डाकिया अपनी पालतू बिल्ली से बहुत प्यार करता था। बिल्ली मोटापे और अस्थमा से पीड़ित थी। डॉक्टर ने बताया कि बीमार बिल्ली ज्यादा दिन तक जिन्दा नहीं रहेगी। बिल्ली के प्यार में इस दीवाने ने उससे तुरन्त ब्याह रचाने का फैसला कर डाला। मिट्जरलिक नाम के व्यक्ति ने बकायदा दूल्हे की ड्रेस पहनी और 15 साल की कैसिला नाम की इस बिल्ली को दुल्हन का सफेद-गुलाबी जोड़ा पहनाया। फिर ईसाई रीति-रिवाज से ब्याह रचा डाला। जर्मनी में जानवर से मनुष्य का शादी करना गैर कानूनी है। इसलिए सरकारी अधिकारियों द्वारा इस शादी को रजिस्टर कराने से इनकार करने के बाद जर्मनी की एक टीवी कलाकार क्रिस्टिन मारिया लोहरी ने यह अनोखी शादी करवाई। मिट्जरलिक ने इसके लिए मारिया को 428 डॉलर (करीब 20 हजार रूपये) दिये। दूल्हे का जुड़वा भाई इस शादी का गवाह बना।

- दैनिक नवज्योति

ढेबर झील और साहसी गोगा

मेवाड़ प्रदेश आदिवासी भीलों और मीणों का बहुल प्रदेश है। पचास प्रतिशत से अधिक की आबादी के कारण उदयपुर जिला जनजाति जिला घोषित हुआ। यहां के कई गांव ऐसे हैं जो भील-मीणा-सरदार की बहादुरी के नाम बसे। उदाहरण स्वरूप रोड़ा मीणा के नाम पर रोड़दा (वल्लभनगर), धूलिया के नाम से धुलेव (केशरियाजी), गांगला के नाम से गींगला (सलूम्बर), थोबा के नाम से थोबावाड़ा (झाड़ोल), करमा के नाम से करमाखेड़ा (कविता), उमरा के नाम से उमरड़ा (उदयपुर) बसा।

इसी प्रकार बांस्या ने बानसी, कानी मीणी ने कानोड़, भाना ने भानाड़ा (सालेरा) तथा हीरा ने हरमोर की खूंटी लगाई। होमा के नाम पर उदयपुर की टेकरी की पूरी बस्ती होमपुरा कहलाई। बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ के पीछे भी ऐसी ही दास्ताने हैं।

इनमें गोगा मीणा की बहादुरी तथा साहस की कथा-गाथा निराली है। प्रसिद्धि है कि महाराणा राजसिंह ने ढेबर नामक झील का उद्धार करने उसकी मजबूत पाल बंधाई का काम प्रारंभ किया लेकिन पाल बंध नहीं पा रही थी। दिन को दक्ष मजदूरों द्वारा पाल बांध दी जाती किंतु रात को वह ढह जाती। कई समझेबुझे आये पर इसका रहस्य नहीं बता सके। इस घटना की साक्षी लोकगीत की यह पंक्ति भी दे रही है-'दनड़े तो बंधायो ढेबरियो ने रात फूटे रे तलाब' अर्थात् दिन को ढेबरिया बंधाया और रात को वह फूट गया।

इस घटना से महाराणा की पेरशानी बढ़ गई। सुबह उन्होंने अपने सामंतों के समक्ष इस घटना का जिक्र किया तो उन्हें बताया गया कि गोगा को यदि बुलाया जाय तो वह इसका हल दे सकता है। पता लगाने पर विदित हुआ कि धरियावद के पास के पीपरिया गांव में गोगा गमेती बड़ा जानकार और तंत्रविद्या का उस्ताद है। महाराणा के प्रति वह पूर्ण वफादार और आस्थावान भी है।

दूसरे दिन गोगा को दरबार के समक्ष उपस्थित किया गया। सारी स्थिति जानने के बाद गोगा ने महाराणा से कहा कि अन्नदाता, ढेबर ऐसे नहीं बंधेगा। उसके लिए देवता के समक्ष उत्सर्ग करना होगा। इसके लिए स्वेच्छाधारी आदमी चाहिए जिसके मन में प्रजा हित की भावना हो और राजाजी के प्रति समर्पित होने की उत्कट अभिलाषा। इसके लिए मैं ही अपना समर्पण देना चाहूंगा। मैं सहर्ष तैयार हूं।

गोगा की यह बात चारों ओर फैल गई। समझेबुझे मोतबीर लोगों ने उसकी वाहवाही की और राणाजी की जैजैकार। गोगा के गांव और परिवार के सभी लोग बड़े खुश थे। लोगों ने गांव के देवता से भी पूछना करी। गोगा ने इस परमार्थ के लिए अपना आत्मसमर्पण कर दिया। इस पर महाराणा जयसिंह ने पीपरिया गांव को स्वतंत्र निकाय का दर्जा देकर गोगा के परिवार वालों को सारी बागडोर सौंप दी। यही नहीं, उन्हें न्यायिक अधिकार भी दिये जिसके अंतर्गत वे किसी भी अपराधी को 6 माह तक की कैद की सजा देने के अधिकारी घोषित कर दिये गये।

महाराणा ने इसके अलावा भी गोगा के इस महान दायित्व के फलस्वरूप एक और रीत का भी शुभारंभ किया। जब कभी भी उनका उस क्षेत्र में पधारना होता वे पीपरिया गांव की सीमा प्रारंभ होते ही सवारी से उतरकर पैदल गोगा के घर जाकर उसके परिवार वालों से मिलते। यह परंपरा अंतिम महाराणा भूपालसिंहजी तक ने निभाई।

यही ढेबर का तालाब जब बंधकर पूर्ण हुआ तो उसका नाम राजसमुद्र की तर्ज पर जयसमुद्र-जयसमंद कर दिया गया। इसकी प्रशस्ति में भी राजप्रशस्ति की तरह संस्कृत महाकाव्य लिखा गया किंतु वह न तो जयसमंद की पाल पर शिलोत्कीर्ण हो सका और न ही उसका कोई ग्रंथरूप में प्रकाशन ही किंतु जयसमंद एशिया की बनावटी झीलों में सबसे बड़ी झील के रूप में ख्यात हुई।

इसमें 9 नदियां तथा 900 नालों का बहता पानी प्रतिवर्ष इसे अपने अथाह जल से पूरता है। गलालैंग नाम से गोगा के बलिदान की गाथा आदिवासियों में आज भी सुनने को मिलती है।

झाड़ू लगाते भातखंडे ने संगीत सीखा

कोई विश्वास नहीं करेगा कि महान संगीतज्ञ पं. विष्णुनारायण भातखंडे ने उदयपुर में उस्ताद जाकरूद्दीन खां के घर झाड़ू लगाने का काम किया। झाड़ू लगाने वालों को कौन गले लगाता? सिखाता? झेलने को उन्हें प्रताड़नाएं झेलनी पड़ी पर उनकी लगन ऐसी थी कि बिना किसी गुरु के वे स्वत: ही अपनी होशियारी से प्रेरित होते रहे और जो पांडित्य प्राप्त किया वही उन्हें प्रख्यात संगीतकार के रूप में प्रतिष्ठित कर सका।

उस्ताद जाकरूद्दीन खां अपने घर पर नियमित रूप से प्रतिदिन रियाज़ करते। विष्णुनारायण झाड़ू लगाते हुए ध्यान से सबकुछ सुनकर आत्मस्थ करते और चुपचाप पेंसिल से कागज पर लिख लेते। वहां से छूटकर ज्योंही वे अपने घर पहुंचते, तानपुरे पर वैसी की वैसी रंगत अपनी गायकी में उतार लेते। यह उनके सीखने की उत्कट अभिलाषा और संगीत के प्रति एकनिष्ठ भाव से समर्पण होने की साधक व्रताराधना का ही कमाल था।

भातखंडे की यह चालाकी लाला गिरधारीलाल ने पकड़ ली और अपने मित्र भोलेनाथ नाई को कह सुनाई। दोनों मिलकर भातखंडे के निवास पर पहुंचे और उन्हें बिना कोई आहट दिये छिपकर बैठ गये। भातखंडेजी उस दिन जो कुछ उस्ताद ने गाया, हू-ब-हू उसे अपने कंठ में उतारने का कमाल दिखा रहे थे। दूसरे दिन दोनों जाकरूद्दीन साहब के निवास पर पहुंचे और बीते दिन की गायकी के बोल जो भातखंडे अपनी गायकी से निकाल रहे थे, उन्हें सुना दिये। जाकरूद्दीन साहब यह सुन भौचक्के रह गये। दोनों दोस्तों ने बताया कि उन्होंने छिपकर भातखंडे की सारी करामात और करतूत को जाना।

एक झाड़ू लगानेवाला कैसा छलिया है जो चुपचाप आपकी सारी कला की हू-ब-हू नकल मारकर चोरी कर रहा है लेकिन उसकी बुद्धि की दाद तो देनी पड़ेगी कि बिना किसी के सिखाये उसी आरोह-अवरोह में आपकी गायकी को अपनी नकल में असल करने की दक्षतापूर्वक क्षमता लिए है। ऐसा करते वह आपकी सारी संगीत विद्या मार लेगा और अपना खजाना भर लेगा।

उन्हीं दिनों उस्ताद जाकरूद्दीन खां से लाला गिरधारीलाल भी संगीत सीख रह थे। उन्हें भातखंडे से ईर्ष्या हुई कि उसकी ऐसी तेजतर्रार तीक्ष्ण बुद्धि है कि सुनते ही उसे आत्मस्थ कर लेता है। सब कुछ सुनकर भी यकायक जाकरूद्दीनखां को विश्वास नहीं हुआ। गिरधारीलाल दूसरे दिन उन्हें भातखंडे के मकान पर ले गये। तीनों उनके मकान के नीचे की चबूतरी पर बैठ गये। उस दिन जाकर साहब ने जो कुछ बजाया-गाया, उसे भातखंडे से सुन दंग रह गये।

कहते हैं, तीसरे दिन जाकर खां साहब ने भातखंडे को खूब डांटा और कहा कि तुम बड़े चोर किस्म के अजीब आदमी निकले। जितना मैंने जो कुछ गाया, वह सबका सब अपने कंठ में बिठा लिया। जाओ, भाग जाओ मेरे यहां से। कभी मुझे अपना मुंह नहीं दिखाना। भातखंडे यह डपट सुन तत्काल वहां से भागे।

भोलेनाथ ने मुझे रावजी के हाटे की एक गली में ऊंचाई पर रह रहे अपने मकान पर यह किस्सा तो सुनाया ही, इसके साथ लाला गिरधारीलाल की करामात और जादुई करतबों के भी कई किस्से सुनाये। स्वयं भोलेनाथ भी कम हरफनमौला नहीं थे।

राजकुमार जैन 'राजन' सम्मानित

मेरठ में क्रांतिधरा साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित 'मेरठ लिट्रेरी फेस्टिवल' में 20 नवम्बर को राजकुमार जैन 'राजन' 'क्रान्तिधरा अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य साधक सम्मान' से सम्मानित किये गये। ख्यातनाम अन्तर्राष्ट्रीय कवि डॉ. एजाज पोपुलर मेरठी, रामदेव धरणीधर (मॉरीशस), डॉ. रमा शर्मा (जापान), सरन घई (कनाडा), कपिल कुमार (बेल्जियम) तथा डॉ श्वेता दीप्ति, बसंत चौधरी एवं डॉ. सच्चिनन्द मिश्र (नेपाल) ने राजन को सम्मानित किया। ज्ञातव्य है कि राजकुमार जैन द्वारा उत्कृष्ट लेखन करने वाले रचनाकारों को प्रतिवर्ष सम्मानित किया जाता है। उनके द्वारा अब तक आठ लाख रुपये मूल्य की नि:शुल्कबाल साहित्य पुस्तकें वितरित की जा चुकी हैं।

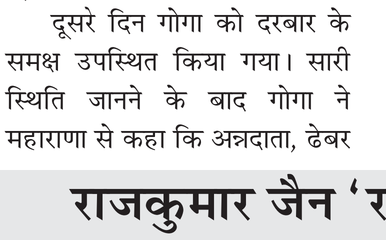

स्मृतियों के शिखर (88) : डॉ. महेन्द्र भानावत

चौखला ऊन के गलीचे बीकानेर के

गलीचों की विशेषता है कि वे सर्दी में गर्मी देने वाले, रोग निरोधक, घर-परिवार एवं ऑफिस की शोभा बढ़ाने वाले होते हैं। जीवनभर साथ देने वाले गलीचे अन्त में मूल्यवान ऐंटिक धरोहर के रूप में अपना महत्व बनाये रखते हैं। पहले हाथ के बने गलीचे होते थे। अब मशीन से बने गलीचे और अनेक भांतों तथा रंगों के गलीचों की बहार देखने को मिलती है। मशीन निर्मित गलीचे अधिक आकर्षक, अधिक सफाई वाले तथा अपेक्षाकृत सस्ते भी होते हैं।

गलीचों का नाम सुनते ही बीकानेर के चौखला ऊन के बने गलीचे याद आ जाते हैं। बीकानेर में सन् 1954 से 1958 तक के अध्ययन काल में हम ठठेरा बाजार स्थित अगरचन्द भैरोंदान सेठिया पारमार्थिक संस्थान में रहते थे। समय-समय पर हम भैरोदानजी सेठिया से मिलने उनके रानी बाजार स्थित ऊन प्रेस जाया करते थे।

बाबूजी भैरोदानजी जैसा दिव्य पुरुष तब भी और उसके बाद भी कहीं नहीं देखा गया। चरण छूने, नमन करने पर वे कभी हमें स्पर्श नहीं करने देते। बहुत कम शब्दों में वे हमारे हालचाल पूछते और दोनों हाथों से आशीर्वाद देते, खूब पढ़ो-लिखो। उनकी कृपा से मेवाड़ के कई छात्रों ने वहां निशुल्क अध्ययन कर अपना जीवन बनाया। धार्मिक पंडित हुए। वकील बने। डाक्टर बने। सी. ए. बने और अन्यान्य क्षेत्रों की सेवा कर अच्छा नाम कमाया। हमारे पास ही उनकी विशाल कोटड़ी जैन साधु-संतों के लिए समाज को भेंट कर रखी थी। वहीं हम आचार्य गणेशलालजी तथा अन्य साधु-साध्वियों के दर्शन करते। व्याख्यान सुनते। सामायिक प्रतिक्रमण करते। तब नानालालजी महाराज भी उनके साथ थे जो बाद में आचार्य बने।

वहां रहने वालों में मेरे भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत पहले से वहीं थे। वे पढ़ने में ही नहीं, साहित्य की कविता, कहानी, निबन्ध तथा वाद-विवाद जैसी सभी प्रतियोगिताओं में सदैव प्रथम रहे। कानोड़ के एक हरिश्चंद्र दक मेरे सहपाठी थे। वे भी वाद-विवाद प्रतियोगिता में सदा प्रथम आते थे। दूसरे भंवरलाल नंदावत शिक्षा विभाग में प्रिंसिपल से रिटायर हुए।

वहीं रह मैंने जैन सिद्धान्त, विशारद, प्रभाकर की पाथर्डी बोर्ड वाली परीक्षा रजत पदक से पास की। पं. घेवरचन्दजी 'वीरपुत्र' तथा पं. श्यामलालजी ओझा जैसे ख्यातनाम गुरु हमें धार्मिक पढ़ाई कराते। घेवरचन्दजी के अनुवाद किये कई सूत्र पारमार्थिक संस्था से प्रकाशित हुए। बाद में पं. घेवरचन्दजी साधु बन गये। उदयपुर में मैंने उनके दर्शन भी किये। एक बम्बोरा के माधोलालजी वया थे जो बाद में दीक्षित होकर साधु बन गये। मैंने उनके भी, जब बाद में बीकानेर गया तब दर्शन किये थे।

वहीं भैरोंदानजी के पुत्र जेठमलजी सेठिया का निवास था। उनकी बड़ी पुत्री स्वर्णलता थीं जिनका विवाह कोटड़ी के सामने ही के. सी. बोथरा से हुआ। बीकानेर की बी. ए. की पढ़ाई पूरी कर मैं उदयपुर आ गया। यहां जब-जब भी स्वर्णलताजी तथा बोथराजी का संतों के दर्शनार्थ आना होता, वे मुझे सूचित कर देते तब उनसे मिलना होता रहता। एक आध बार तो मेरे निवास पर भी उनका आना हुआ। बीकानेर गया तब भी बोथरा दम्पत्ती से मेरी आत्मजा डॉ. कविता और जामाता डॉ. सतीशजी मेहता ने उनके निवास पर भेंट कराई। वर्तमान में उनके पुत्र जयचन्द और बहू पुष्पा गलीचा उद्योग को ठीक से सम्भाले उत्कर्ष लिये हैं। स्मृति शेष बोथरा दम्पत्ती में बोथराजी का निधन 10 अक्टूबर 2011 को हो गया। उनके बाद स्वर्णलताजी भी 25 अक्टूबर 2018 को चल बसीं।

के. सी. बोथरा तथा स्वर्णलता बोथरा

बोथरा साहब का गलीचा उद्योग का बड़ा पहुंचा हुआ उद्योग था। इस क्षेत्र में उनकी विश्व ख्याति रही। उन्हीं दिनों उदयपुर में एक समय संभवत: अगस्त 1985 में उनसे मैंने गलीचों के बारे में लम्बी बातचीत की थी। उन्होंने बताया कि इस उद्योग की समस्त कार्यप्रणाली श्रम प्रधान होने से परिवार के सभी छोटे-बड़े सदस्य रोजगार उपलब्ध कर सकते हैं। यह भी कि इस उद्योग के लिए हर प्रकार की जलवायु अनुकूल रहती है। यह उद्योग कहीं भी फलफूल सकता है।

इसके लिए सूती ऊनी रेशमी सेथेंटिक सभी तरह के फाइबर काम में लिये जा सकते हैं तथापि ऊनी गलीचों का बड़ा नाम है। रंग-बिरंगे धागों से बना गलीचा अधिक मोहक लगता है। गलीचों की विशेषता है कि वे सर्दी में गर्मी देने वाले, रोग निरोधक, घर-परिवार एवं ऑफिस की शोभा बढ़ाने वाले होते हैं। जीवनभर साथ देने वाले गलीचे अन्त में मूल्यवान ऐंटिक धरोहर के रूप में अपना महत्व बनाये रखते हैं।

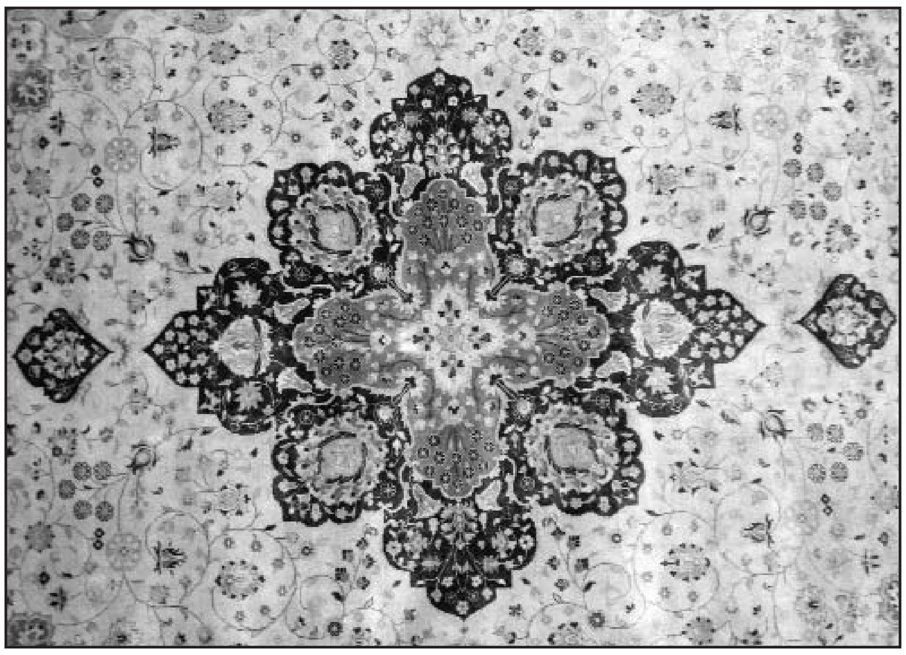

यों गलीचों से तात्पर्य ऊन निर्मित गलीचा ही समझा जाता है। ऊनी गलीचों का ही बोलबाला भी था पर बाद में सूती-रेशमी गलीचों का चलन बढ़ता दिखाई दिया। पहले हाथ के बने गलीचे होते थे। अब मशीन से बने गलीचे और अनेक भांतों तथा रंगों के गलीचों की बहार देखने को मिलती है। व्यापारिक दृष्टिकोण का प्राधान्य होने से मशीन निर्मित गलीचे अधिक आकर्षक, अधिक सफाई वाले तथा अपेक्षाकृत सस्ते भी होते हैं।

लेकिन ऊन निर्मित गलीचों और वे भी बीकानेर की चौखला ऊन के बने गलीचों की मूल्यवत्ता पूरे विश्व में अग्रणी है। ये ही गलीचे उत्कृष्ट कोटि के समझे जाते हैं। इन गलीचों ने इरानी तथा पर्सियन गलीचों को भी पीछे धकेल दिया है।

जहां तक आर्थिक मूल्यांकन का प्रश्न है, इस उद्योग में रूपीवेल्यु का बहुत बड़ा स्थान नहीं है। केवल 350 करोड़ का निर्यात तथा 30 करोड़ का स्थानीय व्यापार है पर अन्य किसी उद्योग में इस जैसी रोजगार प्रदान करने की क्षमता नहीं है।

बोथराजी ने बताया कि गलीचे का जन्मस्थान इरान रहा है। वहां के गलीचों के साथ-साथ चीन ने भी इस उद्योग में अपनी अच्छी दखल दी है ऐसी स्थिति में यदि हमारी सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया तो हमारा गलीचा उद्योग संकट में पड़ सकता है।

बोथराजी ने बताया कि उन्होंने अपनी ऊलन इण्डस्ट्रीज सन् 1958 में बीकानेर में 'बीकानेर ऊलन मिल्स' के नाम से स्थापित की और धीरे-धीरे वृद्धि करते हुए वर्तमान में 60 से अधिक ऊनी इकाइयां कार्यरत हैं। बीकानेर में सर्वप्रथम शत-प्रतिशत शुद्ध देशी ऊन की बुनाई अन्तर्राष्ट्रीय स्टेंडर्ड वूलमार्क निर्धारित मूल्य पर बिक्री शुरू हुई जो अधिक गर्म तथा अपेक्षाकृत अधिक सस्ती भी होती।

पूरे उत्तरी भारत में बीकानेर ऊलन मिल्स के उत्पादन नीटींग ऊन से हाथ की बुनी हुई स्वेटर कार्डीगन आदि का पूरे भारतीय परिवेश में अच्छा नाम रहा और इसी कारण इन्हें पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। बोथराजी के अनुसार पूरे देश में 40 प्रतिशत से अधिक उत्पादन राजस्थान से होता है। इसका कारण चौखला ऊन की श्रेष्ठता है। बोथराजी के प्रतिष्ठान ने अपनी कार्य कुशलता तथा प्रामाणिकता के बल पर अन्य कालीनों के मुकाबले अपनी श्रेष्ठता कायम की। सर्वप्रथम 1300 नोट्स पर स्क्वायर इंच का कालीन बनाया। फिर इसे बढ़ाते हुए 1600 नोट्स स्क्वायर इंच का दूसरा गलीचा बनाया। तब हमारे देश में 900 नोट्स पर स्क्वायर इंच से अधिक का कीर्तिमान नहीं बना था।

सन् 1981 में होलेण्ड में कालीन निर्माताओं का विश्व सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें करीब 30 देशों के कालीन निर्माताओं ने भाग लिया। उस सम्मेलन में 2400 नोट्स का बना गलीचा छाया रहा। उससे बोथराजी को यह प्रेरणा मिली कि वे इससे भी ऊपर के नोट्स का कालीन अपने प्रतिष्ठान द्वारा तैयार करवायें। दृढ़ निश्चय और धुन बैठने से ढाई वर्ष में ही उन्होंने 2900 नोट्स वाला एक खूबसूरत गलीचा तैयार करवाया पर दो-चार नोट्स की आंकड़-बांकड़ में मामूली गलती रहने से उन्होंने 2600 नोट्स का दूसरा गलीचा तैयार करवाया जो विश्व प्रतियोगिता में फाइनेस्ट नोट्स के रूप में दर्ज हुआ।

इसी शृंखला में बोथराजी ने 1300 नोट्स का एक गलीचा संजय गांधी के चित्र पर आधारित बनवाकर प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी को भेंट किया जिसकी बड़ी व्यापक प्रशंसा हुई। इसके पश्चात 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 12 गुना 15 इंची साइज का तैयार करवाया। यह 56 रंग लिये हुए था। उसके बाद 18वीं सदी के कागड़ा शैली के हस्त निर्मित चित्र पर आधारित 15 गुना 21 इंची साइज में राधा-कृष्ण की भावपूर्ण मुद्रा लिये गलीचा निर्मित किया जा 64 रंगों के संयोजन का था।

बोथराजी ने बताया कि उनका प्रतिष्ठान ही पूरे देश का एकमात्र प्रतिष्ठान है जो कच्ची ऊन से लेकर कताई, रंगाई, कारपेट बुनाई तथा निर्यात आदि सारी गतिविधियां एक ही प्रबन्ध व्यवस्था के अन्तर्गत संचालित करते हुए सर्वश्रेष्ठ मेंटेन किये हुए हैं। यही कारण है कि उनकी पैठ और पहचान पूरे विश्व में भरोसा बनाये हुए है। इसका एक कारण उन्होंने समयबद्ध निर्यात को भी बताया। यदि ऐसा नहीं होता तो उन्हें दूसरे प्रतिष्ठानों पर निर्भर रहना पड़ता जिससे वे उस तरह की प्रामाणिकता और गुणवत्ता नहीं रख पाते। उन्होंने बताया कि पूरे विश्व में गलीचों के दो बड़े बाजार पश्चिम जर्मनी और यूएसए हैं। बोथराजी के गलीचों की इन दोनों को ही बड़ी मांग रहती है।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 01 दिसंबर 2019

सम्पादकीय

बचपन, बचपना और बचकाना

पहले तीन पीढ़ियां तो होती ही थीं जो साथ-साथ रहती थीं। चौथी पीढ़ी जुड़ जाने पर परिवार का वरिष्ठतम पुरुष सोने की निसरनी चढ़ता था। चढ़ने वाला जीवन को सार्थक समझता था। समाज में भी वह धन्य नजरों से देखा जाता था। अब तो तीन पीढ़ी क्या, तीन सीढ़ी की चढ़ाई भी मुश्किल हो गई है।

जो जन्मता था वह शिशु बचपन भोगता था। परिवार के सभी हाथों में पलता था। सबके संस्कारों को ग्रहण करता था। सब रूप निखरता था। सब रंग रमण करता था। अब एकल परिवार में आंखें घूमा-घूमा कर भी वह सब नहीं देख पाता है। द्वार बन्द। खिड़की बन्द। भीतर न सवेरा, न दिन और न संध्या नजराणा देती है। पहले ये सब कुछ भी साथ-साथ होते थे। पड़दे नहीं होते थे। अब सब कुछ बन्द होने पर भी ऊपर से पड़दे सबको बन्द किये रहते हैं।

आंखें अब खुलती नहीं। चश्मे से बन्द हैं। पहले भगवान को याद करते समय आंखें बन्द होती थीं। पूरा शरीर ढका-ढका रहता था। आंखों पर भी महिलाएं पड़दा रखती थीं। इसीलिए वे लजवंती कहलातीं। अकेली होने पर भी आंखें खुली नहीं करती थीं। अब महिलाएं जैसे कुछ भी पहनना नहीं चाहतीं। लगता है ढकने को कुछ रहा नहीं।

सो कबीरा मुंहफट कविता में सब कह देता है। फटे बांस की तरह सब फटफट उगल देता है। अब बचपन पंचवटी की कुटी खोलकर स्वयं खड़ी उषा जैसा नहीं आता। लाया जाता है बमुश्किल। जब लाया जाता है तो वह बचपन नहीं, बचपना बनकर आता है और बड़ों की निगाहों में बचकाना हरकत करता है।

कबीरा को क्या दोष दें। वह पहले जिस बाजार में खड़ा रहता वहां अब बाजार ही नहीं है। लम्बी चौड़ी सड़कें, मॉल या कॉम्पलेक्स खड़े हो गये हैं। चौराहे खूबसूरत हैं पर वहां कोई रूकता नहीं। उन्हें देखता नहीं। लाल बत्ती रोकती है तो एक के पीछे एक वाहन बेमन बेपन से मन मसोस मन में भागमभाग लिये भाग निकलना चाहते हैं।

गांव रहे नहीं, बिगड़े बाबू की तरह अस्त-व्यस्त होते जा रहे हैं और शहर बेपनाह पसारा मार रहे हैं। किसको 'बचपन के दिन भुला न देना' की याद पड़ी है।

शानदार स्टंट शो आयोजित

चित्तौड़गढ़। केटीएम, यूरोपीय रेसिंग दिग्गज ने चित्तौड़गढ़ में असाधारण केटीएम स्टंट शो का आयोजन किया। इसका आयोजन पेशेवर स्टंट राइडर्स के उम्दा स्टंट राइड्स एवं ट्रिक्स का प्रदर्शन करने के लिये किया गया था। शो का आयोजन महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज, प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़ में किया गया। पेशेवर स्टंट टीमों ने केटीएम ड्यूक बाइक्स पर असाधारण स्टंट का प्रदर्शन किया।

सुमीत नारंग, वाईस प्रेसिडेंट-प्रोबाइकिंग, बजाज ऑटो लिमिटेड ने कहा कि केटीएम अपनी उच्च प्रदर्शन वाली रेसिंग बाइक्स के लिए विख्यात है। हम हमेशा अपने ग्राहकों को केटीएम बाइक द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले रोमांच एवं उत्साह का अनुभव कराने के इच्छुक हैं। प्रत्येक बड़े शहर में पेशेवर स्टंट आयोजित होते हैं और अगले कुछ महीनों में इनके पैमाने में और बढ़ोतरी होगी। केटीएम एक्सक्लूसिव प्रमुख ब्रांड है और हम केटीएम ग्राहकों को विशिष्ट रूप से केटीएम अनुभव उपलब्ध कराने के लिये तत्पर हैं।

शो में किये गये शानदार स्टंट ने शहरवासियों को खूब रोमांचित किया। अभी तक, केटीएम स्टंट शो का आयोजन सूरत, राजकोट, अहमदाबाद, कांचीपुरम, कोयंबटूर, चैन्नई, विजयपुर, लखनऊ, औरंगाबाद, जम्मू, लुधियाना, जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, कोटा, सीकर, श्रीगंगानगर, अजमेर और कई अन्य शहरों में किया जा चुका है। केटीएम के प्रशंसक आरज़ू मोटर्स, शॉप न.-3 मुस्तफ़ा काम्पलेक्स, घुमर गार्डन के सामने, चित्तौड़गढ़ से केटीएम बाइक्स की श्रृंखला खरीद सकते हैं।

पोथीखाना

कृष्ण छवि को आंखिन पट में ढांकने वाली कवयित्री

सूरदास स्वयं अन्धे हुए। अपनी आंखें फोड़कर अन्धकार का वरण किया और कृष्ण की बाल्य-छवि का अन्तरावलोकन करते पद-रचना से ख्याति अर्जित की किन्तु समानबाई के जीवन में ऐसी कोई नैराश्यपूर्ण घटना नहीं घटी बल्कि भक्ति के उदात्त समर्पण के रहते वृन्दावन के रंगजी के मन्दिर में भगवान कृष्ण से साक्षात्कार होने के बाद अन्य किसी और का अवलोकन सदा सर्वदा के लिए त्याज्य करना श्रेष्ठ समझ आंखों पर पट्टी बान्ध ली।

यह प्रसंग किसी भक्तियुग के चर्चित सन्त-कवि अथवा संताणी-कवयित्री का नहीं अपितु वर्तमान युग में राजस्थान में चारण जाति की कविया शाखा में जन्मी समानबाई का है जिसने दुनियादारी से सर्वथा अलग, अजान रह अत्यन्त सहज, साधारण और समतावादी जीवन जीकर कृष्ण भक्ति में विभोर रहते कविता रचना के माध्यम से अपनी अनुभूति का आनन्द लिया।

कविता के संस्कार उन्हें बचपन से ही मिले। पीहर और श्वसुर गृह के दोनों घराने काव्य-सृजन का पांडित्य लिये थे। समानबाई का जनम वि. सं. 1882 में पिता रामनाथ के घर सीकर जिले के नरसिंहपुरा गांव में हुआ। मात्र तेरह वर्ष की उम्र में उनका विवाह अलवर राज्य के किशनगढ़ के पास के गांव माहुन्द के ठाकुर रामदयाल के साथ हुआ।

'भक्तिमती समानबाई: जीवन और काव्य' नामक इस पोथी का सम्पादन उन्हीं के परिवार की डॉ. मंजुला बारैठ ने बड़े मनोयोग से किया है। समानबाई द्वारा लिखी गई रचनाओं के संग्रह के लिए वे जगह-जगह भटकीं। अनेक महिलाओं से भी सम्पर्क किया तब भी बहुत सारी रचनाएं वे एकत्र नहीं कर पाईं और हो सकता है कुछ वे भी उनके हाथ लग गईं जिनके सम्बन्ध में प्रामाणिकता का वे दावा नहीं कर सकतीं।

प्रारम्भ में उन्होंने अपनी प्रस्तुति में लिखा भी- 'रचनाओं का संकलन करना दुरुह कार्य था। इसके लिए मैंने यात्राएं कीं तथा घर-घर जाकर महिलाओं से संगृहीत करने का कार्य किया। प्राप्त सामग्री महिलाओं की स्मृतिशेष पर आधारित है।'

प्रस्तुत पोथी 5 अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय राजस्थान में भक्ति के उद्भव और विकास से सम्बन्धित है जबकि दूसरे अध्याय में यहां की प्रतिनिधि भक्त-कवयित्रियों का जिक्र किया गया है।

तीसरा अध्याय मत्स्य की मीरां नाम से सम्बोधित समानबाई के जीवन परिचय को लेकर है। चौथा अध्याय उनके

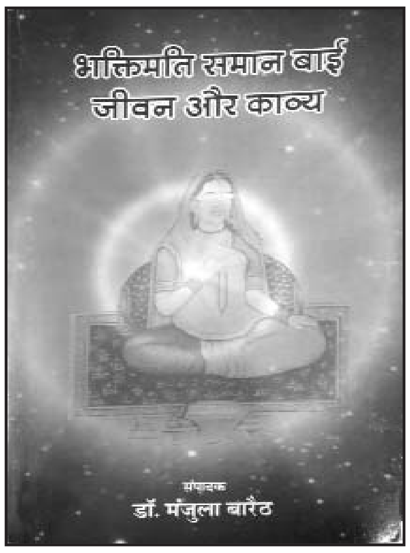

काव्य-वैभव के दिग्दर्शन का दरसाव देता है। अन्तिम पांचवें अध्याय में समानबाई प्रणीत पाठ्य मुक्तक काव्य तथा गीत काव्य का संग्रह लिये है।

कवयित्री समानबाई चूंकि रिश्ते में सम्पादिका डॉ. मंजुला की दादी रही इसलिए भी उन्होंने हर सम्भव उनकी काव्य-रचना का गहराई से अध्ययन-अन्वेषण कर पोथी को काव्यदृष्टि से श्रीसम्पन्न बनाने में कोई कसर नहीं रखी है। वानगी रूप में कुछ स्थल द्रष्टव्य हैं-

विवाह के उपरान्त ही उन्होंने पति से हार्दिक इच्छा व्यक्त करते हुए यह कह दिया था कि मैं अपने इस नश्वर जीवन को भगवद् उपासना में ही लगाना चाहती हूं। पति ने समानबाई की इस इच्छा का सम्मान किया तथा एक आध्यत्मिक वीतरागी सहधर्मिणी प्राप्त होने के सौभाग्य को स्वीकार किया।

दीदीसा का तीर्थयात्राओं का सिलसिला यथावत चलता रहता था। विवाह के कुछ समय उपरान्त ही आप थाणा के ठाकुर श्री हणूतसिंहजी की धर्मपत्नी भटियाणीजी के साथ ब्रज की तीर्थयात्रा पर गईं। वहां की प्रेम रस में पगी राधा-कृष्ण की अनुरागमयी छवि आपके नेत्रों में समाहित हो गई। अनुभूति के उन्हीं क्षणों को एक अपवाद को छोड़कर जीवन में कभी नहीं खुली। आपने भटियाणीजी के समक्ष यह प्रतिज्ञा की कि वे सम्पूर्ण जीवन ईश्वर भक्ति में लीन रहेंगी तथा मोहमाया का तृणवत् परित्याग करेंगी।

सवेर उठकर आप एक भजन बनाती थीं। इष्टदेव को अर्पित करने के बाद ही दिनचर्या प्रारम्भ करती थीं। आपके भक्ति-भाव तथा दैनिक कार्यक्रम में कोई व्यवधान न हो इसलिए सेवक-सेविकाओं की व्यवस्था की गई थी। समानबाई के जीवनपर्यन्त गीता, श्रीमद्भागवत तथा रामायण पाठ सतत चलता रहा। इसी प्रकार आपकी रचनाओं को लिखने के लिए एक लेखक सर्वदा उपस्थित रहता था।

समानबाई ने यद्यपि राम व कृष्ण दोनों से सम्बन्धित रचनाएं लिखीं हैं तथापि उनकी भक्ति कृष्णमयी अधिक प्रतीत होती है। समानबाई की रचनाओं में विविध छन्दों तथा अलंकारों का प्रयोग उनके ज्ञान-वैविध्य को प्रकट करता है।

कवयित्री में भक्ति तथा वैराग्य के अंकुर का स्फुरण परिस्थितिजन्य न होकर, जन्म-जन्मान्तर के संस्कारों का प्रतिफल था। उनमें ज्ञान व भक्ति के संस्कार जन्म से थे। उनमें भक्ति के द्वारा अनुभूति के माधुर्य स्रोतों का स्वत: स्फुरन हुआ जिसने आराध्य के प्रति उनकी दृष्टि को अभिव्यंजित कर दिया।

समानबाई को यौवन अवस्था में वृन्दावन में श्री रंगजी के मन्दिर में कृष्ण से साक्षात्कार हुआ और उसके बाद आपने उन आंखों से किसी और सांसारिक दृश्य को नहीं देखा तथा आंखों पर पट्टी बान्ध ली जो आजीवन रही। दर्शन होने के बाद उन्होंने यह भजन बनाया था-

महलों में हैलो, झरोखां में झेलो
कोण दियो रंगमहलां में हैलो।

इस पुस्तक का प्रकाशन बीकानेर के कमला प्रकाशन, बी-1, सांईकिला, सुदर्शननगर से होकर 200 रूपये मूल्य रखा गया है।

- डॉ. कविता मेहता

कहावतों के कहकहे (12)

(111) कीड़ी हंचै तीतर पापी रौ धन परले जावै
(112) की डोकरियां काम राज कथां सूं रजिया
(113) कीधा जो काम नै भज्या सो राम
(114) कीनै रोणो नै कीनै धोणो, आराम बड़ो है, मूंडो ढक नै सोणो
(115) कीनै बेंगणवायरा कीनै बेंगण पच
(116) कुमार कुमरीऊं पूछे नीं आवै जदी गधेड़ा रा कान ऐंठै

कान्यो-मान्यो

अण कमाऊ उना भोजन

कान्या रे पड़ोस री दो लुगायां आपस में वातां करती गेला माथै कोई आध घंटो वेइग्यौ। कान्यो आपणे ऊपरली मंजल माथै खटकण स्यूं छानोमानो सुणर्‌यो हो। मन में वचार करर्‌यो हो के घर रा बाळक तो कंवारा फरै ने पड़ोस्यां रे फेरा देवा जाय जस्यो होदो वेइग्यो। एक रे घरे दोजो है, गायां भुंकाड़ा मेल री है ने दूजी रे घर रा नाना बाल्क्या चा-दूध करता बाई-म्मा हेलो पाड़र्‌या है पण दोई करमेत्यां लागै नीठ-नीठ मोको देख्यो, आखा अग-जग रा बईड़ा खोल दीधा है।

कान्यो मन-ई-मन मुळकावतो मान्या पां पोंच्यो। मान्यो राब रा सटकड़ा लेतो बोल्यो, राब घणी आछी वणी है। यूं तो जदी भी वणै, आछी ही बणै पण कदीकदाक तो अतरी आछी बणै कै आंगल्यांई चटकर जावा रो मन करै। कान्यो बोल्यो के आज तो मजो आइग्यो, कान भड़े कर। लुगायां री वातां सुण नै धापग्यो। बोल री ही के चार जग्यां वंडी जाण में असी ही जठै छोर्‌यां उमर यापता वेइगी पण हालतांई हाथ पीळा नी कीदा। वडारा तो केई आया पण आजकाल री भणी पढ़ी लड़क्यां कोई गा-हांडा नी है जो जंडे फांदो वंडे लार चली जावै। वी खुद भी चावै कै वांरो जीवणसाथी वांरै मुजब वै। पैली भी स्वयंवर वेताईज हा।

मान्यो बोल्यो, थूं ठीक कैवे। छोर्‌यां गेली नीं री। कोई बंगला वाळो चावै तो कोई आछो भण्यो-पड्‌यो कमाऊ पूत। कोई कार वाळो चावै तो कोई अस्यो जो देश छोड़ विदेशां मांय चाल सकै। कान्यो वचे मोर्‌यो मेल्यो, असी भी छोर्‌यां है जो परवार छोटो चावै। सास-ससुर वै तो ठीक नै नी वै तो घणो चोखो। कान्यो बोल्यो, बात तो ठीक है, हींग लागै न फटकड़ी रंग चोखो आय पण हींग फटकड़ी नीं वै' तो बेरंग वेइजावै। यूं होचतां-होचतां उमर वधती रै नै छोर्‌यां घर मांय बैठी रै। कावत है कै घर-आंगणो कुंवारो आछो नी लागै।

मान्यो बोल्यो, थारी वात पुरानी पड़गी। आजकल तो घरै कई काम नीं वै। छोटा-छोटा फंक्शन भी बारै होटलां मांय, बाड्‌यां मांय करै। सगळा आजाद रैणा चावै। घर गंदो वै जावै तो साफ कस्यो भाईजी करै। रसोड़ो कुण संभाळै। हेंगदन भी लुगायां रसोड़ो पकड़नो नी चावै। अप्टूडेट रैवण स्यूं रंदोळा पाणी सब हवा वेइग्या।

कान्यो बोल्यो, थूं ठीक केवै। पण जी छोर्‌यां एक उमर पछै आछा वर नै आछा घर री वाट नाळै वांनै मनमाफक वर नीं मलै। वगत टल्यां पछै मलसी अण कमाऊ उनो भोजन। वी लुगायां कैयरी ही के वांनै जी साब मिल्या वी अस्याईज मिल्या, जदी वी अण कमाऊ व्हैगा तो उनो भोजन कठै मिलसी। या कावत केई अरथां रो खुलासो करै। दूजी बोली, दारी वा कैवत सुणी कै नीं, चतर कागळो गु माथै बैठे।

मेवाड़ के भित्ति चित्रण पर नेहा सेन को पीएच. डी.

राजस्थान के विविध अंचलों में उसके दक्षिण में स्थित मेवाड़ की न केवल भौगोलिक अपितु सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, पुरातात्विक एवं लोकाधारित जीवनधर्मिता की दृष्टि से भी न्यारी विशेषताएं हैं।

मीरांबाई तथा महाराणा प्रताप की भूमि के रूप में इसकी विश्व ख्याति से सभी परिचित हैं। यहां जितने गढ़-गढ़ैया हैं उनकी शान शौकत और वीर-वीरांगनाओं के बारे में अभी काफी कुछ लिखना शेष है।

ऐसे में नेहा सेन ने उदयपुर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से 'मेवाड़ के भित्ति चित्रण में लोकमंगल से जुड़े मिथक, प्रतीक एवं धारणाएं' विषय को लेकर जो शोधप्रबन्ध प्रस्तुत किया उस पर पिछले दिनों पीएच. डी. की उपाधि प्रदान की गई।

उल्लेखनीय है कि यह अध्ययन यहां के मीरां कन्या महाविद्यालय की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. कहानी भानावत के निर्देशन में किया गया। डॉ. कहानी ने बताया कि छह अध्याय में विभक्त इस तरह का यह अध्ययन पहलीबार ही हुआ है। मेवाड़ क्षेत्र अपनी पारम्परिक समृद्ध चित्रांकन धरोहर तथा व्रतानुष्ठानिक दिव्यताओं से अनुप्राणित है। नेहा ने बड़ी लगन और रूचि के साथ अनेक स्थानों का भ्रमण कर, अनेकों से जानकारी प्राप्त कर अपने अध्ययन को पुष्ट किया है।

गीतांजली में 100 कैंसर रोगी लाभान्वित

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के कैंसर सेंटर द्वारा 3 माह में कैंसर से पीड़ित 100 रोगियों को भोजन नली, ब्रेस्ट, सरविक्स ओवरी गायनी, लीवर, दिमाग, पोस्टेट, हड्डी, पेट, थायराइड, फेफड़े, ब्लैडर, त्वचा, आंख, लिम्फोमा, ट्रिपल मलिग्नांस की बीमारी से निजात दिलाई गई।

ट्यूमर बोर्ड की कुशल व प्रशिक्षित ऑन्कोलॉजी टीम में डॉ. ए. के. गुप्ता, डॉ. अंकित अग्रवाल, डॉ. आशीष जाखेटिया, डॉ. रमेश पुरोहित, डॉ. मीनल भंडारी, डॉ. किरण चिगुरुपली, डॉ. अरुण पांडेय शामिल हैं। सीईओ प्रतीम तंबोली ने बताया कि गीतांजली कैंसर सेंटर में हर तरह की ज्यादातर सुविधाएं नवीनतम तकनीकों द्वारा इलाज किया जाता है।

देश का सबसे बड़ा बरगद

फलासिया पंचायत समिति के मादड़ी गांव में एक ऐसा वट वृक्ष है जो बिना लटों के बहुत लम्बे चौड़े हिस्से में फैला है। विशेष प्रजाति के इस वट वृक्ष की लटें कभी भी जड़ें नहीं बनतीं। ये लटें टूटकर गिरने के बाद भी जमीन पर गीली रहती हैं। करीब एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में अपनी विशेषताओं को समेटे हुए इस विशेष वट वृक्ष के देश में सबसे बड़े होने के दावे हो रहे हैं। बरगद को वट वृक्ष भी कहा जाता है। पीपल की तरह ही बरगद को भी पूजा जाता है। पुराणों के अनुसार बरगद में भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश का वास माना जाता है। इस पेड़ की पत्तियां एक दिन में 20 घंटों से ज्यादा समय तक आक्सीजन बनाती हैं।

पीआईएमएस में पैन क्लीनिक का संचालन शुरू

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, (पीआईएमएस), उमरड़ा में पैन क्लीनिक का संचालन प्रारंभ हो गया है। मुंबई से प्रक्षिशित अनेस्थीशिया विशेषज्ञ डॉ. कमलेश शेखावत एवं इंटरवेंशन रेडियोलॉजिस्ट डॉ. राजाराम शर्मा द्वारा संचालित यह क्लीनिक सब प्रकार के शारीरिक दर्दों के उपचार के लिए है।

पीआईएमएस के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि आधुनिक विज्ञान के अनुसार दर्द को कभी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। सामान्य लगने वाला दर्द भी बहुत गंभीर बीमारी का संकेत हो सकता है। इस क्लीनिक में सिर दर्द, कैंसर का दर्द, नर्वस सिस्टम का दर्द, गुटनों का दर्द, गर्दन का दर्द, पीठ का दर्द, ट्राइजेमिनल न्यूरेल्जिया, चोट का दर्द आदि का इलाज किया जाता हैं। इसके साथ ही क्लीनिक में टिश्यू पुनर्जीवन एवं पुनर्निर्माण की क्षमता रखने वाली पीआरपी थेरेपी भी की जाती है। क्लीनिक में सब तरह की उच्चस्तरीय दवाइयां एवं मशीने उपलब्ध हैं। अब तक कई मरीजों का इलाज इस क्लीनिक में किया जा चुका है। दक्षिण राजस्थान संभाग का, ये इस तरह का अत्याधुनिक सुविधाओं वाला एकमात्र क्लीनिक हैं। ना दर्द सहे ना ही दर्द सहने की सलाह दे- ये इस क्लीनिक की थीम हैं।

जिंक को मिली विश्व स्तर पर 5वीं रैंक

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक को धातु एवं खनन क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए विश्व प्रसिद्ध प्रतिष्ठत संस्था डॉउ जोन्स सस्टेनेबिलिटी इंडेक्स द्वारा किये गये 62 कंपनियों के मूल्यांकन में विश्व स्तर पर 5वां स्थान मिला है। इंडेक्स द्वारा किये गये 26 कंपनियों के मूल्यांकन में एशिया-पेसिफिक क्षेत्र में भी कंपनी को प्रथम स्थान मिला है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने बताया कि जिंक के ओवरऑल स्कोर में पिछले वर्ष की तुलना में 7 प्रतिशत सुधार हुआ है। कंपनी द्वारा सूचकांक के सभी तीन आयामों आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरण क्षेत्र में सुधार देखा गया है जहां कंपनी की तीन सस्टेनेबिलिटी पहलुओं-भौतिकता, पर्यावरण रिपोटिंग एवं मानव पूंजी विकास में सबसे ऊपर है। जिंक की सस्टेनेबिलिटी के प्रति सदैव प्रतिबद्धता एवं प्रयासों की मान्यता तथा प्रगति के लिए चुने गए मार्ग के साथ हमारी यात्रा को मजबूत करता है। डॉउ जोन्स सस्टेनेबिलिटी इंडेक्स में इस नवीनतम रैंकिंग के साथ हमारे पास एक वैश्विक सस्टेनेबल कंपनी के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए और अधिक जिम्मेदारी बढ़ी है। 1999 में प्रारंभ, डीजेएसआई कॉरपोरेट सस्टेनेबिलिटी के लिए स्वर्ण मानक का प्रतिनिधित्व करता है और रोबेकोसम वित्तीय, पर्यावरण, सामाजिक एवं शासन कारकों के विश्लेषण के आधार पर अग्रणी वैश्विक सस्टेनेबिलिटी वाली कंपनियों को ट्रैक करने वाला पहला वैश्विक सूचकांक है जो प्रति कंपनी औसतन 600 डेटा बिंदुओं को एक समग्र स्कोर में परिवर्तित करता है।

भोलानाथ नै क्यूं बिगोवौ

-स्वामी खुशालनाथ 'धीर'-

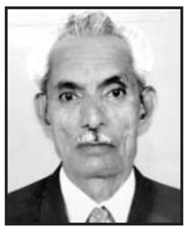

भेलानाथ नै क्यूं बिगोवौ!
अमल तंमाखू / गांजा भांग
आक धतूरा / चिलमां सुलफा
भोलानाथ कद गटकाया!
वांरो नांव लेय गटकावै
जीभ चटौरी नसैड़ी
धरम करम नीं जांणै
साधु, घरबारी!
देखादेखी खुद डूबै
दूजां नै डुबोवै-
भोलानाथ नै क्यूं बिगोवौ!!
वां गरलपान कियो
जग खातिर जैर पी जग चेतायौ
सागर मंथण झगड़ौ मेट्यौ
सुर असुर दोनूं चेताया
झगड़्यां सूं की सार नीं मिळसी
थूक बिलोणौ करौ मती
मंथण कर्‌यां कोई निकळै सार
आसण, खेड़ा / रियाण, जाजमां
धूणी, ठिकाणा, मठ
लेवे अमल / पीवै तंमाखू
गांजा सुलफ अेंठाड़ा
सैं बारी-बारी / कोड
देख्या साधु-संत -ओड
?रबारी मिंदर-पुजारी
देखादेखी खुद डूबै
दूजां नै डूबोवै-
भोलानाथ नै क्यूं बिगोवौ!

'क्लब रोडीज़' लॉन्च

उदयपुर। नोएडा में कैफे रोडीज़ के सफल लॉन्च के बाद वायकॉम 18 कंज्यूमर प्रोडक्ट्स,

वर्क विद फन (डब्लूडब्लूएफ) के सहयोग से अपनी विरासत का विस्तार कर मैरियट जयपुर में क्लब रोडीज़ के साथ सभी रोडीज़ प्रेमियों को यादगार अनुभव देने के लिए तैयार है। वाईब्रेंट क्लब के सभी तत्वों एवं रोडीज़ के ट्विस्ट के साथ यह एक परफेक्ट पार्टी डेस्टिनेशन होगा। इसके एक्सपीरियंशल एडिशंस के तहत, क्लब रोडीज़ नियॉन इंटीरियर्स के साथ डिज़ाईन किया गया है।

सचिन पुंतंबेकर, बिज़नेस हेड, वायकॉम18 कंज्यूमर प्रोडक्ट्स ने कहा कि यह एक नाटकीय रोडीज़ थीम का टास्क ज़ोन एवं एक वॉल ऑफ फेम है, जो इस शो की विरासत का प्रदर्शन करता है, जो भारत में अब एक कल्ट बन चुका है। क्लब का हर कोना सेल्फी प्रेमी पीढ़ी के लिए रोडीज़ थीम की फोटो ग्ज़ों सको ध्यान में रखकर अद्वितीय डिज़ाईन से युक्त है। रोडीज़ बाईक मेहमानों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगी। यह राजपूताना कस्टम्स द्वारा क्लब के लिए खासतौर पर डिज़ाईन की गई है, जो बढ़ते हुए कस्टम मोटरसाईकल बाजार में लीडर हैं। क्लब रोडीज़ दिन में कैफे के रूप में और शाम को लाउंज नाईट्स के रूप में खुला रहेगा। गुरुवार और शनिवार को रात में 9 बजे से क्लब नाईट्स होगी। क्लब रोडीज़ में सर्वश्रेष्ठ डीजे, एश्नोटिक (डीजे बंटी) एवं हिमांशु उर्फ डीजे हिस्टेरिक परफॉर्म करेंगे। क्लब रोडीज़ में स्वादिष्ट फूड एवं ड्रिंक्स का संग्रह है, जिसका नाम रोडीज़ के अद्वितीय स्टाईल में रखा गया है। बीरबल की खिचड़ी, द भसड़ बिटवीन मैनी, रियल हीरो वाले पकौड़े से लेकर गट्टे की नॉक आउट खिचड़ी तक मेन्यू की विस्तृत श्रृंखला उन सभी को बहुत पसंद आएगी, जिनने रोडीज़ को यहां तक लाने में सहयोग किया है। इसके साथ कुछ खास सिग्नेचर कॉकटेल, जैसे कटिंग पेग, बनारसी पान, स्ट्रेट फ्रॉम द फील्ड्स आपके अंदर के रोडी के लिए तैयार किए गए हैं।

'एक मुठो हंशी' अभियान लॉन्च

उदयपुर। द हिमालया ड्रग कंपनी का फ्लैगशिप अभियान- 'मुस्कान' पश्चिम बंगाल पहुंच गया है। इस अभियान के अंतर्गत, हिमालया लिप केयर ने कोलकाता में अपनी पहल 'एक मुठो हंशी' प्रस्तुत की। प्रतिष्ठित हस्तियां ममता कैरोल, वाईस प्रेसिडेंट एवं रीज़नल डायरेक्टर फॉर एशिया, स्माईल ट्रेन एवं मेडिकल विशेषज्ञ-डॉ. पार्था प्रतिम गुप्ता, इंस्टीट्यूट ऑफ चाईल्ड हैल्थ, कोलकाता तथा डॉ एसए फैज़ल, कैमरी हॉस्पिटल, वर्धमान भी मौजूद थे। इसके तहत हिमालया ने दुनिया की सबसे बड़ी कटे होंठ व तालु चैरिटी, स्माईल ट्रेन इंडिया के साथ सहयोग किया, ताकि ज़रूरतमंद बच्चों को निशुल्क जीवन रक्षी क्लेफ्ट सुधारक सर्जरी का लाभ पहुँचाया जा सके।

राजेश कृष्णमूर्ति, बिज़नेस डायरेक्टर-कंज्यूमर प्रोडक्ट्स डिवीज़न, हिमालया ड्रग कंपनी ने कहा कि हम अपने अभियान, 'एक मुठो हंशी के ज़रिये कटे होठ और तालु के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी प्रदान करना चाहते है। हमारा अभियान 'मुस्कान' हर घर में सेहत व प्रसन्नता का संचार करने के लिए हिमालया के उद्देश्य 'खुश रहो खुशहाल रहो' को प्रतिबिंबित करता है। इस अभियान द्वारा आज तक 550 से ज्यादा बच्चों की क्लेफ्ट सर्जरी की जा चुकी है।

इम्पीरियल ब्लू सुपरहिट नाइट्स में हास्य और संगीत का अनूठा ताल-मेल

उदयपुर। इम्पीरियल ब्लू सुपरहिट नाइट्स भारत के 11 शहरों में जाने के लिये तैयार 'रॉक एंड लोल' का छठा सीजन प्रस्तुत करते हुए गर्वान्वित है। पर्नोड रिकार्ड इंडिया के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर कार्तित मोहिन्द्रा ने कहा कि इस टूर की शुरूआत 24 नवंबर को गुवाहाटी से हुई। नये कॉन्सेप्ट के जरिये दर्शक 'मेन विल बी मेन' के वास्तविक क्षणों का आनंद लेंगे, जहाँ हास्य की भारी खुराक के साथ ऊर्जावान सजीव संगीत होगा। सुपरहिट नाइट्स में प्रतिभावान संगीतकार और हास्य कलाकार प्रदर्शन करेंगे और इन दोनों के मिलन को देखकर दर्शक रॉक एन लोल' कहेंगे। सीजन 6 में विशाल-शेखर, सुनील ग्रोवर, जस्सी गिल, जुबीन गर्ग, बी पाक और केके-मोहन, जो सजीव प्रस्तुति देंगे। यह टूर जोरहट (30 नवंबर), आसनसोल (1 दिसंबर), डिब्रूगढ़ (8 दिसंबर), जयपुर (14 दिसंबर), बैंगलोर (11 जनवरी), कोलकाता (12 जनवरी), अंबाला (19 जनवरी), मैंगलोर (1 फरवरी), हैदराबाद (8 फरवरी) और अंत में विजाग (15 फरवरी 2020) पहुँचेगा।

चिक हेयर कलर शैंपू लॉन्च

उदयपुर। केविनकेयर के सबसे पुराने और मशहूर शैंपू ब्रैड चिक ने चिक हेयर कलर शैंपू के तौर पर नया उत्पाद लॉन्च किया है। चिक हेयर कलर शैंपू बाल रंगने के पुराने तौर तरीकों के मुकाबले बेहद आसान समाधान मुहैया कराता है। इसके लिए किसी दूसरे की मदद नहीं पड़ती और बाल रंगने का समय भी बचता है। चिक के ग्राहक शानदार निजी अनुभव के साथ महज 10 मिनट में बाल रंगने के बेहतरीन नतीजे पा सकते हैं। सबसे आसान और सस्ते चिक हेयर कलर शैंपू को अब उदयपुर और आसपास के लोगों के लिए भी मुहैया करा दिया गया है।

वेंकटेश विजयराघवन, डायरेक्टर एवं सीईओ - पर्सनल केयर एंड अलाइंस ने कहा कि शोध से पता चला है कि इस क्षेत्र में घर पर बाल रंगने वाले ज्यादातर ग्राहकों को पता ही नहीं होता कि कौन से हेयर कलर उत्पाद सबसे अच्छा काम करेगा और वे इसके नतीजों को लेकर चिंतित रहते हैं। सौंदर्य के प्रति जागरुक ग्राहक लागातर आसान और बेहतरीन गुणवत्ता वाले उत्पादों की मांग कर रहे हैं। केविनकेयर के शानदार शोध और विकास परंपरा का सहारा लिया ताकि घर में बाल रंगने के अनुभव को शानदार बना सकें। चिक हेयर कलर शैंपू के पैकेट पर ही सभी दिशा-निर्देश साफ तौर पर लिखे होते हैं। ग्लव्स पहन कर चिक हेयर कलर शैंपू बालों पर लगाना है। 10 मिनट तक शैंपू लगाने के बाद पानी से धो लें।

मिश्रा जिंक्र के उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त

उदयपुर। वेदान्ता समूह की सीसा-जस्ता एवं चांदी उत्पादक कंपनी हिन्दुस्तान जिंक्र के उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी के पद पर अरूण मिश्रा को नियुक्त किया गया है। मिश्रा जिंक्र के उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी के पदभार के साथ ही कम्पनी के ग्रुप एक्जिक्यूटिव कमेटी के सदस्य भी होंगे एवं कंपनी की

विस्तार योजनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। मिश्रा आईआईटी खड़गपुर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक के साथ ही न्यू साउथ वेल्स सिडनी विश्वविद्यालय से माइनिंग एवं बेनिफिसिएशन में डिप्लोमा और सीईडीईपी फ्रांस से सामान्य प्रबंधन में डिप्लोमा किया है।

कैनन इंडिया ने उदयपुर में बिज़नेस इमेजिंग सॉल्यूशंस (बीआईएस) लाउंज लॉन्च किया

उदयपुर। 'बिज़नेस कैन बी सिंपल' के अपने सिद्धांत पर बल देते हुए एवं बिज़नेस के वातावरण में होने वाले गतिशील परिवर्तन को देखते हुए, अग्रणी डिजिटल इमेजिंग कंपनियों में से एक, कैनन इंडिया ने उदयपुर में अपने 'बिज़नेस इमेजिंग सॉल्यूशंस' (बीआईएस) लाउंज के लॉन्च की घोषणा की।

कैनन के अधिकृत पार्टनर, प्रिंस एंटरप्राईज़ के सहयोग से उदयपुर के नए बीआईएस लाउंज का उद्घाटन क्षेत्र में हर छोटे बड़े संगठन की ऑफिस इमेजिंग की सभी जरूरतों के लिए वन स्टॉप डेस्टिनेशन के रूप में किया गया। देश में कंपनी के नौ अन्य बीआईएस लाउंज हैं, जिनमें से दो दिल्ली में हैं एवं चेन्नई, रायपुर, अहमदाबाद, बैंगलोर, सिलिगुड़ी, नासिक और अलीपुरद्वार में एक-एक है। पहले बीआईएस लाउंज की स्थापना 2017 में दरियागंज, नई दिल्ली में की गई थी और यह इमेजिंग लीडर इस साल 15 बीआईएस लाउंज तक विस्तार करने की योजना बना रहा है। के. भास्कर, वाईस प्रेसिडेंट, बिज़नेस इमेजिंग सॉल्यूशंस (बीआईएस), कैनन इंडिया ने कहा कि हमें राजस्थान में अपना पहला बीआईएस लाउंज खोलने की खुशी है। उदयपुर हमारे लिए एक महत्वपूर्ण बाजार है और यह क्षेत्र के सबसे तेजी से विकसित होते शहरों में से एक है। मजबूत एसएमई, नौकरी करने वालों एवं सरकारी संगठनों की मौजूदगी के साथ इस शहर में व्यवसाय की अपार संभावनाएं हैं।

अपनी तरह के पहले अभियान में बीआईएस लाउंज हमें अपने ग्राहकों के नज़दीक ले जाते हैं और उन्हें हमारे ऑफिस ऑटोमेशन उत्पादों की श्रृंखला के लाईव डेमो का अनुभव लेने का मौका प्रदान करते हैं।

बजाज फिनसर्व द्वारा पर्सनल लोन की पेशकश

उदयपुर। शादी को यादगार बनाने के लिये बजाज फिनसर्व ने पर्सनल लोन की पेशकश की है। शादी के लिए पर्सनल लोन बेहद उपयोगी साबित हो सकता है। बजाज फिनसर्व की ओर से पर्सनल लोन का विकल्प जांच सकते हैं यह एक ऐसा समाधान है जो बिना किसी कोलेटरल के 25 लाख रु तक की ऋण राशि उपलब्ध कराता है जिससे आसान अवधि में इस ऋण को चुका सकते हैं। अपने नियोजित एवं अनियोजित व्यय के लिए इस ऋण का उपयोग कर सकते हैं। अपनी खुशियों के साथ समझौता किए बिना शादी के जश्न को यादगार बना सकते हैं। बजाज फिनसर्व के पर्सनल लोन के कुछ खास फीचर्स लेकर आया है जिसमें 25 लाख रूपये तक की ऋण राशि, 60 महीनों तक की प्रत्यास्थ अवधि,फ्लेक्सी लोन सुविधा,आसान योग्यता मापदण्ड इत्यादि शामिल है। 25 लाख तक की ऋण राशि-इतने बडे अनुमोदन के साथ आप वैन्यू से लेकर केटरिंग, डेकोरेशन, हनीमून तक सभी योजनाएं बना सकते हैं।

एसबीआई कार्ड और विस्तारा का प्रीमियम को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च

उदयपुर। एसबीआई कार्ड और देश की उत्कृष्ट फुल-सर्विस कैरियर विस्तारा ने यात्रा करने वाले शहरी भारतीयों के लिए अपनी तरह का अनूठा प्रीमियम क्रेडिट कार्ड लॉन्च करने के लिए हाथ मिलाए हैं। नए कार्ड को दो वैरिएंट्स - क्लब विस्तारा एसबीआई कार्ड प्राइम और क्लब विस्तारा एसबीआई कार्ड में लॉन्च किया है।

हरदयाल प्रसाद, एमडी एवं सीईओ, एसबीआई कार्ड ने कहा कि नया कार्ड घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय यात्रा खर्च पर अनूठे बेनेफिट एवं बेमिसाल मूल्य प्रस्ताव के जरिये कार्डधारकों को सबसे बेहतरीन यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। गौरतलब है कि एसबीआई कार्ड आरबीआई के अनुसार, क्रेडिट कार्ड आउटस्टैंडिंग की संख्या और वित्त वर्ष 2019 और 30 सितंबर 2019 को समाप्त हुई छह महीनों में कुल क्रेडिट कार्ड खर्च के लिहाज से दूसरी सबसे बड़ी क्रेडिट कार्ड कंपनी है। क्लब विस्तारा एसबीआई कार्ड प्राइम भारतीय यात्रियों की लगातार उभरती जरूरतों को पूरा करेगा जोकि स्टाइल एवं लग्जरी के साथ यात्रा करने की चाहत रखते हैं।

भारत सरकार की उडान योजना पर इज़ माय ट्रीप के ऑफर से और सस्ता होगा सफर

उदयपुराईट्स के लिए घरेलु और अंतर्राष्ट्रीय यात्रा पर ऑफर

उदयपुर। एप बुकिंग में तीसरे नंबर पर आने वाली इज माय ट्रीप के जरिये उदयपुर से घरेलु और अंतर्राष्ट्रीय सफर करने वालों के लिए सफर पर विशेष ऑफर से यात्रा सस्ती और सुलभ होगी।

कंपनी की हेड कम्यूनिकेशन्स एवं बिजनेस डेवलपमेंट रोली सिन्हा धर ने बताया कि इजमाय ट्रीप उड़ान स्कीम वाले मार्ग पर उड़ानों में अतिरिक्त छूट प्रदान करके सरकार की उड़ान योजना को बढ़ावा दे रहा है जिसमें उदयपुराईट्स के लिए घरेलु पर 500 रूपये और अंतर्राष्ट्रीय यात्रा पर 2000 रूपये की छूट से सफर और अधिक सस्ता होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अक्टूबर, 2016 में उडान, उडे देश का हर नागरिक योजना शुरू की और इस योजना के तहत पहली उड़ान अप्रैल 2017 में शिमला से दिल्ली के लिए शुरू की गई। उड़ान पूरी दुनिया में अपनी तरह की पहली योजना है जो मार्केट बेस्ड मेकेनिजम के जरिये क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढावा दे रही है।

महानगरीय शहरों और टियर -2 शहरों में रहने वाले ज्यादातर लोग छोटे शहरों से है जो बडे शहरों के बीच अच्छी कनेक्टिविटी चाहते हैं। उडान उनकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक सही विकल्प हैं। उडान योजना के तहत, चयनित एयरलाइनों की 50 प्रतिशत सीटों की सीमा 2500 रुपये प्रति सीट प्रति घंटा थी। इस पर इज माय ट्रीप 500 रुपये की अतिरिक्त छूट दे रही है। जिसके लिए प्रोमो कोड का उपयोग कर इसका लाभ उठाया जा सकेगा। इस ऑफर का फायदा उठाने के लिए अपनी अगली फ्लाइट इज माय ट्रिप से बुक करनी होगी और बुकिंग करते वक्त कूपन कोड: EMTUDR लगाना होगा।

रोली सिन्हा धर ने बताया कि इज माय ट्रीप प्रमुख ट्रैवल एग्रीगेटर्स में से एक है जिसके उपभोक्ता अब इसकी वेबसाइट, मोबाइल साइट और एंड्रॉइड और आईओएस मोबाइल ऐप पर अब आईआरसीटीसी से ट्रेन टिकट भी ऑनलाइन बुक कर सकते हैं। फ्लाइट बुकिंग की तरह ही ट्रेनों में भी कोई सुविधा शुल्क नहीं लगेगा। इसके अलावा इजमाय ट्रीप अपने उपयोगकर्ताओं को सीट की उपलब्धता, ट्रेनों की यात्रा अवधि और स्टेशनों के बीच यात्रा के समय की जानकारी उपलब्ध कराने की भी सुविधा देगा। इजमाय ट्रीप पर ट्रेन बुकिंग सुविधा तक पहुंच के लिए, उपयोगकर्ताओं को ऐप को अपडेट करना होगा।

इजमायट्रिप के एक्सेक्यूटिव डायरेक्टर, प्रशांत पित्ती ने कहा कि उड़ान फ्लाईट्स रिजनल कनेक्टिविटी स्कीम, जो कि भारत सरकार के साथ आरसीएस स्कीम के तहत् है, आईआरसीटीसी रेल्वे टिकट पर विशेष ऑफर, राजस्थान खासतौर पर उदयपुर के ग्राहकों को विशेष ऑफर दिया जा रहा है।

दोनों घर सुरंगा........

(पृष्ठ एक का शेष)

हमारी गाड़ी का मुख्य पाट, धरौंदा भी बरगद का है। यही सोच आपसी सम्बन्ध का निर्वाह करने पिरोल में आ गया। सगाजी को बहुत-बहुत याद कर कहना कि कभी हमारे घर भी सै-परिवार दर्शन दें।

अनेक असंख्यक लोकगीत हैं लाड़ो बेटी के। इसीलिए लोककण्ठों पर लाड़ में पलती बेटी के लिए बेटा ही अधिक चलन में है। यह बेटी सबके हाथों में अछन-अछन पलती है। बड़ी होती है। सबकी बड़ाई पाती है। सै परिवार के लिए बेटी का जनम शकुनी है। जैसे रोड़ी प्रतिदिन ही बढ़ती, फलती फूलती है वैसे ही बेटी के जन्म से परिवार में रिद्धि सिद्धि समृद्धि का वधोतरा होता है। कहावत फूटती है-'रोड़ी वधै ज्यूं धन वधै। धान वधै। पूतां रो परवार वधै।'

बेटी से पूछा गया, कैसी हो लाड़ल बेटी? वह जवाब देती है, 'अन धन भर्‌या भखार, सदा ए सुरंगो घर बापरोजी म्हारा राज।' अर्थात् मेरे पिता का घर सदा ही सुरंगा है। अन्न धन के भण्डार भरे हैं। कोठे-कोठियां भरी हैं। आंगन में कान्ह कंवर-से भाई खेलते हैं। भौजाइयों का झाझा झूमका, मौजी झुण्ड है।

दरबार में पिताजी का हुकम और अन्त:पुर में मावड़ का राज चलता है। दासियां पीसणा करतीं और चाकर बाहर कमाई करते हैं। दरवाजे पर सोने के सुहावने कटघरे वाले हाथी और मखमली जीन कसे घोड़ों की कतार लगी है।

एक अन्य गीत में लाड़ो बेटी बखान करती है- 'म्हारे बाबोजी री पोळ सुपोळ, आंगन में ऊभो केवड़ो।' अर्थात् मेरे पिताजी की सुन्दर पिरोल है जिसके आंगन में केवड़ा का वृक्ष खड़ा है। ऊंची लाल किंवाड़ों वाली भव्य रावटी यानी अट्टालिका है। रसोड़े में भाभी रांधना कर रही है। मावड़ रेंटिये पर सूत कात रही है। सुहावने मनभावने चंदण चौक में कन्हैया-सा भतीजा खेल रहा है।

ऐसे मनहर वातावरण में लाड़ो बेटी बड़ी हो जाती है। बड़े ठाठबाट से उसका विवाह रचा दिया जाता है। अच्छे खातेपीते घर से ओपता आपता लाड़ा हाथीड़ा हजार, घुड़ला पचास तथा अपार जानियों के साथ बरात लेकर बाई को विवाह कर ले जाता है। देखते-देखते 'एल्यो भावज घर आपणो म्हैं तो जावां पियूजी रे देस' कहकर भावज को पीछे से देखभाल की भलावण दे लाड़ो विदा होती है। उसकी विदाई में पूरा गांव साक्षी बनता है।

महिलाएं रोती-बिलखती अचेत-सी हो जाती हैं। विदा लाड़ो एक-एक कर सबके गले मिलती है। सबके चरण छूती, धोक लगती लाड़ो सबका आशिष पाती है। सुबकियां भरतीं भलावण देती हैं-

'लाड़ो, ससुराल में चूल्हे की आग और परिण्डे के पानी को कभी समाप्त न होने देना। सास का हुकम बजाना। पड़ोसन की सीख मत लेना। ननद का कहा न टालना। देराणी-जेठाणी से राजी-राजी रहना। गज भर का घूंघट, गज भर की गाती और गज भर की पटली किये रहना। भली कहलाना। लाज शर्म से रहना।'

विवाह के बाद पहलीबार ससुराल से जब लाड़ो पीहर आती है तो सबसे पहले उसकी मां उसके हालचाल पूछती है, कैसा है ससुराल? कैसे हैं सास ससुर? कैसे हैं देवर ननद? देवरानी जेठानी? कैसे हैं जंवाई राजजी?

लाड़ो बड़े धीरज, संयम और आत्मविश्वास से कहती है- 'चोखा, रंगा सुरंगा ससुराल है। यशोदा-सी सास और वसुदेव से ससुरजी हैं। लछमण-से देवर और लक्ष्मी-सी ननदिया है। गणगौर के झुंड-सी देराणियां जेठाणियां हैं। उगते सूरज से मेरे स्वामी हैं।'

लाड़ो बेटी के आने की खबर पूरे गांव में फैल जाती है। सखी सहेल्यां पास पड़ोसीनियां सब उससे मिलने पहुंचती हैं। नाना तरह के प्रश्न करती हैं, कैसा है ससुराल? कैसे हैं वहां के सब लोग? सगे समधी? कैसी रहती ससुराल में? दिन कैसे बीतता? दिनचर्या कैसी रहती? कैसी रखी सास ने? ससुरजी कैसे लगे? पतिदेव कैसे मिले?

लाड़ो बेटी सबके उत्तर देती। कुछ भी छिपाती नहीं। कई लोकगीत मिलते हैं जिनमें लाड़ो बेटी कहती सुनी जाती है। कुछ की बानगी इस प्रकार है-

(क) सास ननद के कहने में, झीणे घूंघट में आराम से रहती हूं। भाई की प्रतीक्षा करती हुई महलों में मोती पिरोती हूं।

(ख) ससुरजी ने मेरे लिए टोडरा और सासूजी ने नवलड़ा हार बनवाया। जेठजी ने बाजूबंद और जिठानी ने उसकी लूमक झूमक बनवादी। प्रियतम ने तेवटा और सर्व सुख दिया।

(च) ससुरजी घर के राजा और सास ठकुराइन हैं। दो-दो छप्पर, झोंपड़े तथा मेडियां हैं। गोबर से लिपापुता आंगन तथा सूरजसामी पिरोल है। पौरी में ससुरजी की चौकी है। उस पर वे चौधरी बने बिराजमान हैं। सास सपूती स्याणी, चौकी में बैठ चरखा चलाती है। कुंवर ससुरजी की आज्ञा में और कुंवरानी सास के हुकम में चलती है। ससुरजी पुत्र की सराहना करने वाले और सासूजी कुल बहू को सराहती हैं।

(छ) उधर के आंगन जेठजी घूमते जैसे पांच गांवों के राजा हैं। इधर जिठानी जैसे राजा की पुत्र वधू है। आंगन में देवराज शोभित हैं। देवरानी जैसे गढ़पति की कुलवधू-सी तथा बेटे कुल दीपक की भांति और कुल बहुएं किरत्यों के झुण्ड की तरह शोभायमान हैं।

(ट) धोबी कपड़े धोता है। मोची पगरखी सीता है। खाती साल सालता है। माली बागों में पानी सींचता है। मालन छबड़े भर साग लाती है। नौकर खेत बोते हैं। ऊंटों की कतारें लदतीं हैं। सींगों वाली भैंसें दूध देतीं हैं। गायों का अन्त है न पार। ब्राह्मण का बेटा भोजन बनाता है। बेटियां गुड़िया रमतीं हैं। बच्चे सोने के झूले झूलते हैं।

(ठ) हम महलों में मौज करतीं हैं। मौजां तो मांडांजी रावळां। चम्पा बाग घूमने जाती हूं। घूमण जावांजी चम्पा बाग में। हमारा राजा शिकार जाता है। हम नहाने सुरतां बावड़ी जाती हैं। राजा समुद्र नहाते हैं। लाख मोल की पगड़ी पहनता है। हम लाखेणी चूंदड़ी ओढ़ती हैं। राजा दाख की दारू पीते और हम दूध के प्याले पीती हैं।

(त) ससुराल का कुटुम्ब बड़ा है। भौजी ने दस मन पीसना पीसा है। ननद ने नौ मन दाल दली है। दस मन रोटियां पोई हैं। नौ मन दाल रांधी है। जीमने वालों की कतार लगती है।

(थ) बड़ा घरबार है। देवर भेड़ें चराता है। जेठ ऊंट चराते हैं। ननद बछड़े और पति गाय-भैंसें चराते हैं। बेटी खेलती, बेटा दूध चूंघता है। देराणी पीसती, जेठाणी भोजन बनाती और हम मौज करती, सौंठ खाती हैं।

(प) कोठे पूरे ठांड कर, ऊपर तक भरे हैं। जेठ गादी लाद मालवा और देवर गुजरात जायेंगे। मालवा से चावल और गुजरात से गेहूं लायेंगे। घर आकर कोठे-कोठी भरेंगे।

इन लोकगीतों में किसी तरह का कोई अभाव वर्णित नहीं है। अभाव तो मन का है। दरिद्रता और कमता सोच और समझ की है। इसीलिए हमारे देश का हर व्यक्ति सम्पन्न है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से कुछ तो अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/
आदिवासी जीवनधारा	395/
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/
राजस्थान के लोकनृत्य	200/
गुजरात के लोकनृत्य	200/
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/
भारतीय लोकमाध्यम	75/
अजूबा भारत	200/
पाबूजी की पड़	50/
लोककलाओं का आजादीकरण	250/
उदयपुर के आदिवासी	250/
निर्भय मीरां	250/
रंग रूड़ो राजस्थान	100/
कुंवारे देश के आदिवासी	100/
जन्हें मैं जानता हूं	100/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/
राजस्थान के थापे	150/
कठपुतली	60/
जनजातियों में गाथा गायकी	350/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

साहित्य और साहित्यकार

-डॉ. किशोर काबरा-

सत्य के शिवत्व को सुन्दर रीति से अभिव्यक्त करने वाली रचना को साहित्य कहते हैं। ऐसी रचना को जब शब्द, अर्थ, भाव और प्रभाव की दृष्टि से सामाजिक स्वीकृति मिल जाती है और वह देश, काल, व्यक्ति, घटना और कथ्य की शाश्वती को आत्मसात कर लेती है तब इतिहास में परिगणित हो जाती है।

रचना का यह साहित्य अभिधान कभी कालिदास का 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ' बनकर सामने आता है। कभी तुलसीदास का 'आखर अरथ अलंकृति नाना' बनकर हमारीचेतना से जुड़ता है। कभी वह प्रसाद का 'हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' बनकर सामने आता है। कभी 'वीणावादिनी वरदे' के रूप में निराला का पूजन-अर्चन बनता है।

यही वाङ्मय पूजा है। यही शब्द ब्रह्म है। उसके बिना मनुष्य अधूरा है। वह पशु से भी नीचे स्तर पर श्वास लेने वाला जन्तु है। 'साहित्य संगीत कला विहीन:। साक्षात पशु पुच्छ विषाणहीन:।' इसीलिए कहा गया है।

साहित्य समाज का दर्पण है पर ऐसा दर्पण जो मात्र चेहरा ही नहीं दिखाता, उसे सुन्दर बनाने का उपाय भी बताता है और उपक्रम भी करता है। विश्व को विष से बचाकर अमृत प्रदान करने का काम शिव ही करते हैं। शिव अवढ़र दानी हैं। आशुतोष हैं। कल्याण मूर्ति हैं। यह शिवत्व जब साहित्य में आ जाता है तब 'एक: शब्द: सम्यक् ज्ञात:, सम्यक् प्रयुक्त: इहलोके कामधुक् भवति।' यह वाक्देवी 'स्वान्त: सुखाय' से आगे बढ़कर तब 'लोक हिताय' बनकर आशीर्वाद की मुद्रा ग्रहण करती है, तब शब्द धन्य हो जाते हैं। अर्थ सार्थक हो जाते हैं। भाव अभाव से निकलकर स्वभाव बन जाते हैं।

यह शिवत्व ही है जो साहित्य को अमरत्व प्रदान करता है। शिव को इतना महत्व इसीलिए मिला है कि वे विष को पचाना जानते हैं। बचाना जानते हैं। रचाना जानते हैं। विष शंकर का सौन्दर्य बन जाता है।

पाश्चात्य प्रभाव के कारण साहित्य शब्द एक बड़े फलक पर सम्पूर्ण लेखन कार्य के लिए व्यवहृत होने लगा। धर्म, दर्शन और अध्यात्म भी साहित्य के बिना नहीं जी सकते। साहित्य में सत्य, शिव और सुन्दर की त्रिवेणी प्रवाहमान रहती है। यहां कला, कला के लिए भी है। कला जीवन के लिए भी है और कला जीवन मुक्ति के लिए भी है। यहां कला यथार्थवादी भी है। आदर्शवादी भी है और आदर्शोन्मुख यथार्थवादी भी है।

साहित्य उत्पादन नहीं, सर्जन है। वह उपभोक्तावाद से नहीं, उपयोगितावाद से जुड़ा है। वह समाज को बहिष्कृत नहीं, परिष्कृत करता है। इसी तरह साहित्यकार अहंकार से ओंकार तक की यात्रा करता है। वासना से उपासना की ओर प्रयाण करता है। शब्द से नि:शब्द की प्राप्ति का प्रयत्न करता है। ग्रन्थ से निग्रंथ में प्रवेश करता है। अतिक्रमण से प्रतिक्रमण की दिशा में चलता है। वह शव से शिव की दिशा में आगे बढ़ता है। वस्तुत: साहित्यकार व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, विश्व और अखिल ब्रह्माण्ड के लिए मंगलकामना करता है।

साहित्यकार का भी अपना उदात्त चरित्र होता है। वह योगी की तरह, तपस्वी की तरह, साधक की तरह जब अपनी लेखनी को आंसुओं में डूबोकर भोजपत्र पर चन्दन की तरह घिसता है, तब उसके लेखन से शिवत्व की सुवास आती है। इतिहास के प्रत्येक पृष्ठ पर अंकित कालजयी रचनाधर्मिता ने अपनी-अपनी विधाओं में, अपनी-अपनी रीति से अपने-अपने समय में अपनी-अपनी योग्यतानुसार साहित्य के सभी रूपों में 'शिवत्व' की रक्षा की है। साहित्य का पूरा इतिहास 'शिव' के चमत्कार से भरा पड़ा है।

साहित्य उत्पादन नहीं, सर्जन है। वह उपभोक्तावाद से नहीं, उपयोगितावाद से जुड़ा है। वह समाज को बहिष्कृत नहीं, परिष्कृत करता है। इसी तरह साहित्यकार अहंकार से ओंकार तक की यात्रा करता है। वासना से उपासना की ओर प्रयाण करता है। शब्द से नि:शब्द की प्राप्ति का प्रयत्न करता है। ग्रन्थ से निग्रंथ में प्रवेश करता है। अतिक्रमण से प्रतिक्रमण की दिशा में चलता है। वह शव से शिव की दिशा में आगे बढ़ता है। वस्तुत: साहित्यकार व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, विश्व और अखिल ब्रह्माण्ड के लिए मंगलकामना करता है।

साहित्यकार का भी अपना उदात्त चरित्र होता है। वह योगी की तरह, तपस्वी की तरह, साधक की तरह जब अपनी लेखनी को आंसुओं में डूबोकर भोजपत्र पर चन्दन की तरह घिसता है, तब उसके लेखन से शिवत्व की सुवास आती है। तब वह कह उठता है-

घिस गया इतना कि चन्दन हो गया हूं।
झुक गया इतना कि वन्दन हो गया हूं।
छू लिया मैंने तो पारस हो गए तुम।
छू लिया तुमने तो कुन्दन हो गया हूं।।

वह कवित-विवेक के सभी स्तरों को पार करके भी अहंकार से ग्रसित नहीं होता। उसमें एक प्रकार की कोमलता और सरलता आ जाती है।

सत्य के माध्यम से शिव और सौन्दर्य की साधना करने वाले रचनाकारों की लम्बी परम्पराएं पूरे विश्व में व्याप्त हैं। उनमें वैविध्य है तो नावीन्य भी है। एक-दूसरे के समानान्तर चिन्तन की धाराएं हैं तो कालातीत सत्य और युगीन सत्य के विरोधाभास भी हैं, पर इससे उसकी निष्ठा और समर्पित चेतना पर प्रश्नवाचक चिन्ह नहीं उभरते।

इतिहास के प्रत्येक पृष्ठ पर अंकित कालजयी रचनाधर्मिता ने अपनी-अपनी विधाओं में, अपनी-अपनी रीति से अपने-अपने समय में अपनी-अपनी योग्यतानुसार साहित्य के सभी रूपों में 'शिवत्व' की रक्षा की है। प्रेमचन्द का हामिद अपनी दादी के लिए मेले में से चिमटा लेकर आता है ताकि रोटियां बनाते समय उसके हाथ न जलें। शिवत्व की प्रतिष्ठा के लिए इससे अच्छा उदहरण और क्या मिलेगा?

'शिव' के इसी प्रभाव के कारण साहित्य ने ह्रदय परिवर्तन किए हैं। सही मार्ग सुझाए हैं। रत्नावली के दो दोहों ने रामबोला को सन्त तुलसीदास बना दिया। राजा जयसिंह को एक दोहे ने पूरी तरह बदल दिया। तुलसी के एक पद ने मीरां को द्वारकाधीश के चरणों में बिठा दिया। साहित्य का पूरा इतिहास 'शिव' के चमत्कार से भरा पड़ा है। उसी के स्वर मिलाकर मैं भी बड़ी विनम्रता से कह रहा हूं-

खेत श्रद्धा है, पसीने का उसे अमृत पिलाओ,
बीज है विश्वास उसको खेत में जाकर जिलाओ।।
जिंदगी की क्यारियों में फूल-फल पत्ते सभी हैं,
स्वयं खाओ किन्तु उसके पूर्व औरों को खिलाओ।

एक जन कवि के दोहों ने महाराणा की दिशा बदल दी

-तेजसिंह तरूण-

भारतीय इतिहास में ऐसे कई उदाहरण पढ़ने को मिलते हैं जब कवियों ने अपनी ओजभरी कविता से टूटते हुए स्वाभिमान को बचाया। फरवरी 1903 के दिन एक उदाहरण का सुनहरा पृष्ठ इतिहास में और जुड़ गया। इस दिन अंग्रेज वायसराय लार्ड कर्जन का स्वप्न चूर-चूर हो गया और मेवाड़ का स्वाभिमान टूट कर बिखरने से बच गया।

भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन का मस्तिष्क इस देश में एक ऐसा अभूतपूर्व एवं प्रभावशाली 'दरबार' करने का सुन्दर स्वप्न देख रहा था जिस 'दरबार' की खबरों को सुनकर ब्रिटेन के प्रभुत्व की चकाचौंध से संसार की आंखें आश्चर्य से भर उठें। इस 'दरबार' के सफल आयोजन के लिए कर्जन अथक परिश्रम में जुटा हुआ था।

अपनी सफलता का उसे पूर्ण विश्वास भी था। डर था तो केवल यही कि कहीं उदयपुर का स्वाभिमानी राणा इस अवसर पर अनुपस्थित न हो जाए किन्तु जिस राज्य को मुगल साम्राज्य की असीम शक्ति भी दिल्ली बुलाने में असफल रही वहां कर्जन महाराणा की उपस्थिति की पूर्व स्वीकृति प्राप्त करने में सफल हो गया। महाराणा की स्वीकृति के पश्चात उसे अपने 'दरबार' की सफलता पर कोई सन्देह नहीं रह गया था और वह उस दिन की कल्पना मात्र से प्रसन्नता में समा नहीं रहा था, जिस दिन उसके आगे मेवाड़ के राणा सहित भारत के सभी राजा लोग उसकी उपस्थिति में होंगे।

तत्कालीन मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह अपने दल-बल सहित एक विशेष ट्रेन से दिल्ली दरबार में उपस्थित होने के लिए रवाना हो गए। महाराणा के दिल्ली जाने की खबर से भारत के सभी स्वाभिमानी नागरिकों को गहरी ठेस लगी। स्वाभाविक भी था, क्योंकि एक ऐसा महाराणा जिसका अतीत स्वाभिमानी एवं गौरवशाली रहा है, वह अब एक परकीय सत्ता के सम्मुख अपना सिर झुकाने जा रहा है, यह बात उन्हें पसंद नहीं थी।

देशवासियों का यह सोचना गलत भी नहीं था क्योंकि जिस राणा वंश के स्वाभिमानी महाराणा प्रताप को याद कर अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध राष्ट्र भक्त अपनी कुर्बानी देने की तैयारी कर रहे थे, आज उसी प्रताप के उत्तराधिकारी को गोरी सरकार के आगे झुकते हुए भला कैसे देखा जा सकता था।

इसी भावना को लेकर मेवाड़ के ही एक कवि केसरीसिंह बारहठ ने महाराणा को क्षत्रिय धर्म का और उनके गौरवशाली एवं स्वाभिमानी वंश-परम्परा का स्मरण कराने की प्रबल इच्छावश वीर रस के 13 प्रभावशाली दोहे लिखकर उदयपुर भेजे, जहां केसरीसिंह की तरह के स्वाभिमानी सोचे के राज कर्मचारियों ने उन दोहों को पसन्द कर दिल्ली की ओर तेजी से बढ़ती हुई ट्रेन में ही महाराणा के पास पहुंचवा दिये।

महाराणा फतहसिंह ने जब कवि केसरीसिंह के दोहों को पढ़ा तो उनकी धमनियों के रक्त में उबाल आ गया। आंखों में ललाई उभर आई। बाजू फड़क उठे और उन्हें अपने स्वाभिमानी वंश का इतिहास याद हो आया। बस अब देखना क्या था, जिस ट्रेन के पहिये दिल्ली की जमीन छूने ही वाले थे कि महाराणा का आदेश हो गया ट्रेन को उदयपुर की ओर मोड़ दो।

ट्रेन मुड़ गई क्योंकि महाराणा की आंखों के सामने बार-बार उस कवि के ये शब्द मंडरा रहे थे कि- 'अनेक युद्ध हुए तब भी महाराणा निर्भय रहे। हे फतहसिंह! अब सिर्फ फरमानों को देखते ही यह कैसी हलचल मच गई? जिसके सिंहासन के आगे बादशाहों के सिर झुके हैं, फतहसिंह अब किसी अन्य राजा की पंक्ति में मिल जाना तुझे कैसे फबेगा? क्या अब महाराणा दूसरे राजा की सवारी में हाथी-घोड़ों की धूल में समा जाएगा? हे फतहसिंह! तब महाराणा के हाथियों के युद्ध की उड़ी हुई गिरद (धूल) पृथ्वी पर नहीं समाती थी।'

हे शिशोदिया (राणा वंश), दिल्ली का दम्भी किला तुझे सिर झुकाते देखकर मन ही मन हंसेगा और इस दिन को अपने लिए अभिमान का दिन समझेगा। अब तक तुझसे सबकी यही आशा है कि महाराणा अपने वंश-रीति को रखेंगे।

अत: हे फतहसिंह! अपनी प्रतिष्ठा और गर्व को राजनीति के बल से तुझे रखना ही होगा, नहीं तो समस्त हिन्दू जो आज तक सूर्य की भांति ताकते रहे वे उस दिन जिस दिन तुझे तारा (स्टार ऑफ इंडिया) बने हुए देखेंगे तो वे अवश्य ही निश्वास डालेंगे।

अत: हे फतहसिंह! तेरे हाथ में तो तलवार रहती है, उसके रहते हुए दूसरे राजाओं की तरह नजराने (अपने से बड़े राजा को दी जाने वाली भेंट) को हाथ कैसे फैलेगा? केसरीसिंह के ये दोहे आज 'चेतावनी रा चुंगट्या' नाम से प्रसिद्ध हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।